समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

मार्च २००५ ♦ वर्ष ५५ ♦ अंक ३ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

प्रादेशिक सम्मेलनों के अधिवेशन

पूर्वोत्तर प्रदेश

गौहाटी में बालिका छात्रावास हेतु जमीन देने की घोषणा की

श्री तरुण गोगोई, मुखयमंत्री, असम अपना भाषण देते हुए।

श्री तरुण गोगोई, मुखयमंत्री, असम दीप प्रज्वलित करते हुए। साथ में हैं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान व नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री कन्हैया लाल बाकलीवाल आदि

सम्मेलन स्थायी कोष के लिए रु. १ करोड़ व छात्रावास के लिए रु. १७ लाख की घोषणा

बिहार प्रदेश

मंच पर बैठे श्री जगन्नाथ पहाड़िया, श्री मोहनलाल तुलस्यान, श्री सीताराम शर्मा, श्री भानीराम सुरेका, श्री रामावतार पोद्दार, श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला एवं डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल।

पूर्वोत्तर प्रदेश

श्री कनकसेन डेका, सभापति, असम साहित्य सभा दीप प्रज्वलित करते हुए। साथ में हैं राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय महामंत्री भानीराम सुरेका, ओंकारमल अग्रवाल अदि।

बिहार प्रदेश

गौरव शोभा यात्रा - सारे शहर में भ्रमण करने के उपरान्त अधिवेशन स्थल में पहुंचने पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने अगुवानी की।

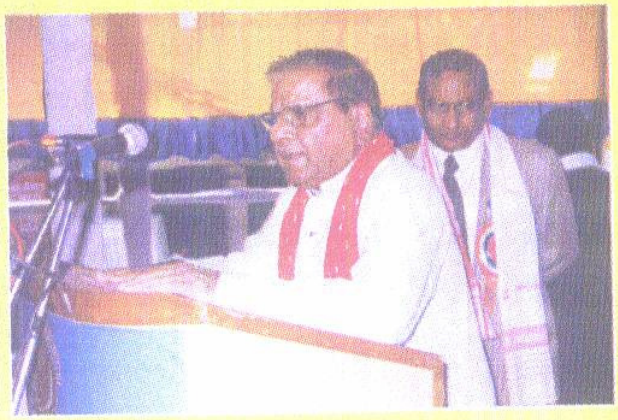

भाषण देते हुए राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	५
रोना मना है / *श्री सीताराम शर्मा*	६
पायें खुशियों का संसार, बच्चों को दें संस्कार / *श्री भानी राम सुरेका*	७
अन्तर्जातीय विवाह-चिन्ता नहीं आत्मचिन्तन का विषय है / *श्री रामअवतार पोद्दार*	८
नैतिकता से विहिन होती जा रही भारतीय राजनीति / *श्री केवलचंद जैन*	९
कविताएं - अहंम, जिंदगी / *डा. लखवीर सिंह निर्दोष*	९
प्रश्न तीन, तेरह व तीस का / *श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट*	१०
बसन्त आते-जाते / *श्रीमती कोमल अग्रवाल*	११-१२
कविताएं : गीत / *श्री किशोर कल्पनाकांत*, अर्थ / *श्री नरेन्द्र कुमार बगड़िया*	१२
चोखाराम - वाह, वाह / *श्री निर्मोही व्यास*	१३-१४
कविता : गौरव उत्सव / *श्रीमती प्रेमलता खंडेलवाल*	१४

युग पथ चरण

- पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का जोरहाट में १२वां प्रांतीय अधिवेशन सम्पन्न
- बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का २४वां प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न

१५-२५

- उत्कल मध्य प्रदेश आदि प्रादेशिक सम्मेलनों एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच आदि के महत्वपूर्ण समाचार

समाज विकास

मार्च, २००५

वर्ष ५५ ● अंक ३

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

- सम्पादक

फरवरी अंक मिला। आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दशम अधिवेशन के विषय में पढ़कर प्रसन्नता हुई। इसमें महिला सत्र में 'अन्तर्जातीय विवाह एक सामाजिक चिन्तन' पर जो विचार रखे वह सराहनीय है। महिलाओं में जागरूकता आना ही अनेक सामाजिक समस्याओं का समाधान है। जैसे समय बदलता है उसी तरह समाज के अभिभावकों को भी परिस्थितियों के अनुसार ताल मेल रखकर विकासोन्मुखी मार्ग पर बढ़ना ही बुद्धिमानी है।

-लक्ष्मीनारायण शाह
राउरकेला, उड़ीसा

मैं 'समाज विकास' की नियमित पाठिका हूं। इस पत्रिका की सामग्री देश की ज्वलन्त समस्याओं, सामाजिक बुराइयों, कुप्रथाओं पर ध्यान आकर्षित करती है तथा उनके निराकरण हेतु मारवाड़ी समाज के प्रयासों का विवरण उत्साहजनक है।

- डॉ. तारा लक्ष्मण गहलोत, जोधपुर

'समाज विकास' के अवलोकन के पश्चात् इस निश्चय पर पहुंचा कि आप श्रेष्ठ संपादक हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं तथा विविध-विषयों से जुड़े आलेखों, निबंधों तथा व्यंग्य कहानी, कविता आदि से हर अंक सजाने संवारने के प्रति सचेष्ट रहते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन के मुखपत्र के नाते राजस्थानी भाषा की स्तरीय रचनाओं का कुछ अभाव महसूस हुआ। मैं राजस्थानी भाषा का चर्चित रचनाकार हूं। मेरी गजल पुस्तक व मेरे गीत गुंनीजनों द्वारा सर्वत्र सराही जा रही है।

- राजेन्द्र स्वर्णकार
बीकानेर, राजस्थान

लिखते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि पत्रिका नियमित रूप से मिल रही है एवं उसकी सभी लेखन सामग्री अति रोचक रहती है।

- बद्रीप्रसाद टीबड़ेवाल, भागलपुर

निर्मली स्थित बजाज धर्मशाला की सुधि लेने हेतु

मारवाड़ी समाज अपने अमूल्य धरोहरों की रक्षा करने से उदासीन क्यों?

निर्मली सुपौल जिला अंतर्गत करीबन दो सौ परिवार मारवाड़ी समाज से जुड़ा है इसमें अग्रवाल, ओसवाल, राजस्थानी ब्राह्मण व अन्य हैं। पूर्व के पुरखों ने सामाजिक हितों को ध्यान में रखते हुए धर्मशाला, स्कूल, अस्पताल, गौशाला आदि में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

दूसरी ओर आज समाज के संयुक्त परिवारों के बजाय एकल परिवारों तथा सामाजिक बिखराव के चलते इस क्षेत्र में मारवाड़ी समाज अपने पुरखों के द्वारा अमूल्य धरोहरों की रक्षा करने में असमर्थ है। निर्मली स्थित बजाज धर्मशाला जिसका निर्माण मानिकचन्द रंगलाल बजाज द्वारा वर्षों पूर्व कराया गया था आज अपनी उपेक्षा की दास्तान सुना रही है। इसके अति महत्वपूर्ण भवन की पूर्णत: उपेक्षा है। इसकी अगल-बगल की खाली जमीन की अवैध बिक्री खरीद करके निजी भवन तक बना लिये गये हैं। विगत २५ वर्षों से इसका रंगरोगन तक नहीं कराया गया। वर्तमान में अंचल कार्यालय क्षेत्राधीन इस का रख-रखाव विगत वर्षों से कर रहा है। धर्मशाला के प्रति समाज छद्म समाजसेवियों की उदासीनता का परिणाम धर्मशाला का वजूद समाप्त हो जाने के रूप में है। अध्यक्ष, मारवाड़ी समाज, इस बजाज धर्मशाला के रक्षार्थ अपने स्तर से बचाने तथा समाज की अमूल्य धरोहर के रक्षार्थ पहल करें क्योंकि स्थानीय मारवाड़ी समाज की आपसी एकता के अभाव में समाज की अमूल्य संपत्ति बर्बाद हो रही है।

- सुशील कुमार नाहर, निर्मली

राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में स्थान दिलाने के लिए तथा प्रान्तीय भाषा का दर्जा दिलाने हेतु एक अलग से प्रस्ताव पारित किया गया है। इसके लिए प्रयत्न जारी था। आशा है कि अभी तक कोई विशेष उपलब्धि हुई होगी।

मारवाड़ी समाज के पूर्वजों ने राजस्थान से यहां तथा भिन्न-भिन्न देशों में आकर बसे और मेहनत परिश्रम, ईमानदारी तथा देश सेवा भक्ति एवं मानव सेवा में संलग्न रहे। इन्हें मारवाड़ी जाति को कौन-सी जाति की श्रेणी का स्थान दर्जा मिला है।

- नथमल जोशी, जमालपुर

उपरोक्त दिशा में सम्मेलन १९५४ से निरन्तर प्रयत्नशील है।

- सम्पादकीय

अमेरिका में राम मुद्रा

अमेरिका में डालर के साथ वन राम मुद्रा विगत दो वर्षों से चलन में है। यह मुद्रा पेपर करेंसी के रूप में है। इसमें विश्व शांति राष्ट्र हिन्दी में वन राम अंग्रेजी में राम का आधा चित्र जिसके सिर पर सूर्य चिह्न मुकुट तथा पीठ पर तरकस के तीन तीर बने हैं। दूसरी ओर राजा राम परमार्थ रूप भी हिन्दी में लिखा है।

लुधियाना पंजाब से संबंध रखने वाली किन्तु अमेरिका में ही पली बॉबी जिंदल लुईसियाना से अमेरिका के हाउस आफ रिप्रेजेन्टेटिव्स लोकसभा के लिए भारी बहुमत से विजयी होकर प्रथम अग्रवाल और द्वितीय भारतीय अमेरिकन सांसद बन गई है।

दिल्ली के चंद्रमोहन अग्रवाल द्वारा संकलित अग्रवाल वैश्य महापुरुषों पर जारी डाक टिकटों की संख्या अब ३० हो गई है।

घनश्यामदास गुप्त, भोपाल

दायरों की कैद से बाहर निकलकर देखिए

✍ मोहनलाल तुलस्यान

होली के पावन अवसर पर समाज विकास के सभी पाठकों, शुभचिंतकों एवं मारवाड़ी समाज के सभी सम्मानित सदस्यों को मेरी हार्दिक मंगलकामना।

हम उत्सवधर्मी लोग हैं। उत्सव को मनाने के लिए हमारी तैयारी जिस जोर-शोर से होती है वह अद्वितीय है। सदियों से उत्सव की यह अवधारणा रही है कि इस अवसर पर गरीब-अमीर, छोटे-बड़े, ऊंच-नीच सब एकरस होकर भ्रातृत्व बंधन में बंधे, सामाजिक एकता को अक्षुण्ण बनाये रखते हुए वृहत उद्देश्यों को पूरा करने का संकल्प लें।

होली हमें ऐसा ही अवसर प्रदान करती है जब रंगों की सतरंगी छटा में हम सब रंगमय हो जाते हैं। विविध रंगों का लेप हमारे तन-मन को प्रेमरंग से सराबोर कर देता है।

प्रेम हमारी शाश्वत भावना रही है। हम मारवाड़ियों के पास दुनिया के लिए प्रेम के अतिरिक्त कुछ रहा ही नहीं। जब हमारे पूर्वज जीविका के संधान में दिशावर को निकले थे तो उनके पास सिवाय प्रेम के और क्या था? मगर इसी प्रेम के बूते उन्होंने दुनिया को जीता। वे जहां भी गये अपना सारा प्यार उड़ेल दिया। प्यार, जिसमें कहीं बनावटीपन नहीं था। जीने की जिजीविषा में वह प्यार ही अमृत बन गया और हमारा समाज पूरे देश और विश्व में पुष्पित-पल्लवित होता चला गया।

प्रेम का प्रतिदान प्रेम ही होता है। अगर हम दिल की गहराइयों से किसी के प्रति प्रेम प्रकट करते हैं तो वह हमारा विरोधी नहीं हो सकता।

विरोध तो तब होता है जब भावना में कहीं खोट हो, बनावटीपन हो।

आज अगर मारवाड़ियों का कहीं विरोध हो रहा है तो उसका कारण समाज के लोगों की भावना में आया बनावटीपन है। औरों के विरोध की बात छोड़ भी दें तो अपने परिवार और समाज में भी एक-दूसरे के विरोध में मारवाड़ी खड़े नजर आते हैं।

सभ्यता के विकास ने हमारे जीवन को जितना सुविधापूर्ण बनाया है, मानसिक तौर पर उतना ही हमें कमजोर बना दिया है। हृदय की विराटता अब इतिहास की बात होती जा रही है। सिर्फ 'मैं' की भावना को प्रचारित-प्रसारित किया जा रहा है।

हम धार्मिक लोग हैं। धर्म और अध्यात्म के नाम पर करोड़ों रुपये मारवाड़ी समाज के लोग खर्च करते हैं। पर धर्म के सबसे सरल सूत्र 'मैं का त्याग करो, ईश्वर तुम्हारे मन में वास करेंगे; मैं सारे कलहों की जड़ है', को आत्मसात् नहीं कर पा रहे।

एक शेर याद आ रहा है-

सिर्फ सांसे लेने को तो जीना नहीं कहते यार
दिल ही दुखता है, न अब आंख ही तर होती है।'

हमारा हृदय इतना कठोर क्यों हो गया है कि हम अपने भूखे, नंगे भाई को देखकर भी नहीं पसीजते? उन्नत समाज का दावा करने वाले हम समाज पर लगे गरीबी, अशिक्षा, दहेज-हत्या, कुसंस्कार, आडम्बर के धब्बों को क्यों नहीं मिटाते?

क्या ये धब्बे हमें उन्नत समाज के होने को प्रमाणित करते हैं या कि हमारी खोखली बुनियाद को हास्यास्पद बनाते हैं?

हमने अपने जीवन, रहन-सहन, आचार-व्यवहार को एक दायरे में कैद कर दिया है। इससे इतर हम देखना-सुनना ही नहीं चाहते, लेकिन मेरा मानना है कि-

आपकी दुनिया से बेहतर एक दुनिया और है
दायरों की कैद से बाहर निकलकर देखिए।

जब हम संपूर्णता में समाज को देखेंगे, इसकी अच्छाइयों, बुराइयों की पड़ताल करेंगे एवं इसके उत्थान के लिए समवेत प्रयास करेंगे तो निश्चित ही हमारे जीने का मजा कुछ और होगा। हम वास्तविक मनुष्य कहलाने के अधिकारी होंगे। हमारे उत्सवों का रंग और निखर जाएगा।

लेकिन इसके लिए जिस बात की सबसे पहले आवश्यकता है, वह है- प्रेम की शाश्वत भावना को ग्रहण करके उसे प्रचारित-प्रसारित करने की।

आइए हम परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति प्रेम प्रदर्शन का एक नया अध्याय शुरू करें।●

''रोना मना है !''

✍ **सीताराम शर्मा,** *राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन*

बिड़ला खानदान का सबसे चमकता सितारा
घनश्याम दास का चहेता पौत्र
सरला-बसन्त कुमार का एकलौता बेटा
आदित्य विक्रम बिड़ला की मृत्यु पर विजय की कहानी

पिछले दिनों एक पुस्तक के विमोचन समारोह का निमंत्रण प्राप्त हुआ। पुस्तक का नाम था ''नॉट एलाउड टू क्राई : द बिड़ला बैटल वीथ कैंसर''। कलकत्ते के बाहर रहने के कारण मैं चाह कर भी उक्त समारोह में उपस्थित नहीं हो सका। सोचा बड़ा औद्योगिक घराना है, उसके जन सम्पर्क विभाग ने कोई जीवनी प्रकाशित की होगी। लेकिन पुस्तक का शीर्षक मेरी संवेदनाओं को छू गया।

गत सप्ताह दिल्ली एयरपोर्ट के बुक स्टाल पर पुस्तक पर नजर पड़ी और खरीद ली। कोलकाता की फ्लाईट कुछ लेट थी, रेपर खोला और पढ़ने बैठ गया। दमदम पहुंचते-पहुंचते १९० पेज की किताब पढ़ डाली।

यह आदित्य विक्रम बिड़ला की कहानी नहीं है। यह मारवाड़ी समाज के सबसे प्रतिष्ठित औद्योगिक घराने के आदर्शों, मूल्यों एवं सिद्धांतों की एक लाजवाब दास्तां है। पारिवारिक अनुशासन के साथ-साथ पारस्परिक अटूट प्रेम भावना एवं सम्मान की गाथा है। परिवार के बच्चों के चरित्र निर्माण में माता-पिता एवं दादा-दादी की क्या भूमिका हो सकती है इसकी सही झलक बिड़ला परिवार में मिलती है। पत्राचार के माध्यम से एक पीढ़ी का दूसरी पीढ़ी से वार्तालाप एवं संदेश संभवत: इस परिवार की विशेषता रही है। यह परम्परा प्राय: १०० वर्षों के बाद आज भी परिवार में बदस्तूर जारी है।

पिता घनश्याम दास १५ वर्ष के पुत्र बसन्त कुमार को लिखते हैं- ''मैंने तुम सबको इस तरह नहीं पाला है कि तुम मुझसे कुछ छिपाओ। तुम अब मेरे मित्र के समान हो। मुझसे छिपाते हो तो मुझे लगेगा कि मैं पिता के रूप में तुम्हारे विश्वास के लायक नहीं हूं, मुझे अपनी कमी पर दु:ख होगा।'' यह उस पिता की भावना थी जिसने ३२ वर्ष की अल्प उम्र में अपनी पत्नी को खो दिया था एवं गांधी जी की सलाह पर दूसरा विवाह न कर अपनी छ: संतानों तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियों के सही लालन-पालन को प्राथमिकता दी। बचपन में जिस संस्कार के बीज डाले यह उसी का फल था कि १५ वर्ष की छोटी उम्र में जब बसन्त कुमार बिड़ला ने अपना पहला व्यवसाय आरम्भ किया तो उसने अपनी डायरी में १५ जुलाई १९३६ को लिखा - ''मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि मुझे एक अच्छा व्यवसायी बनने का आशीर्वाद दे।'' प्रार्थना 'बड़ा' या 'सफल' व्यवसायी की नहीं बल्कि एक ''अच्छे'' व्यवसायी की।

माता-पिता एवं अपने बुजुर्गों के प्रति गहरी निष्ठा एवं अटूट सम्मान बिड़ला परिवार की खूबी रही है। २०वीं शताब्दी में अमेरिका में पढ़ रहा आदित्य अपने प्रत्येक पत्र में माता-पिता या दादा जी को ''मेरा आपके चरणों में प्रणाम'' लिखकर सम्बोधित करना इसका परिचायक है।

अपनी मंगेतर राजश्री से पत्राचार करने के लिए आदित्य अमेरिका से अपने माता-पिता की अनुमति के लिए पत्र लिखते हैं। यह बात कोई सत्ययुग की नहीं बल्कि १९६२-६३ की है।

मारवाड़ी समाज में आज जो खामियां एवं दोष उत्पन्न हो रहे हैं। पारिवारिक अनुशासन एवं बुजुर्गों के प्रति सम्मान में कमी, संस्कारों का अभाव, पिता-पुत्र एवं भाई-भाई के बदलते रिश्ते, सच्चे पारिवारिक प्रेम की कमी के कारण टूटते परिवार - इन सबके बीच बिड़ला परिवार की यह कहानी एक आदर्श है, एक प्रेरणा है।

पायें खुशियों का संसार, बच्चों को दें संस्कार

✍ भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सर्वप्रथम सम्मेलन से जुड़े मेरे सभी सहयोगियों, प्रांतीय सम्मेलनों के पदाधिकारियों, सदस्यों व मारवाड़ी समाज के प्रत्येक सदस्य को होली की मंगलमय कामना।

जब समाज विकास का यह अंक आपके हाथों में पहुंचेगा तब तक होली हो चुकी होगी और प्रीति-सम्मेलनों की शृंखला भी खत्म होने को होगी।

जैसा कि होली मनाने के पीछे एक सदुद्देश्य रहता है बुराई को खत्म कर अच्छाई के शुरूआत की। मैं मानता हूं कि अगर हमारे समाज का प्रत्येक सदस्य इस भावना को अपने दिल में बिठा ले और तदनुरूप कार्य करना प्रारंभ करे तो निश्चित ही यह समाज उन्नति पथ पर अग्रसर होगा।

आत्मालोचन एक ऐसी प्रक्रिया है जो पर्वों के अवसर पर हमें अपने गिरेबां में झांकने का संदेश देती है। मैं भी आत्मालोचना को सर्वोपरि मानता रहा हूं एवं उससे जो भी सारतत्व प्राप्त हुआ है उसे सबके साथ बांटकर बहस का हिमायती भी रहा हूं। इसी कड़ी में यह विचार आपके सामने है-

हमारी सामाजिक और पारिवारिक संरचना कभी इतनी व्यापक होती थी कि पूरी दुनिया को यह आश्चर्य होता था कैसे इतने बड़े परिवार और समाज के बीच लोग सुखी, संपन्न, शांतिपूर्ण जीवन जी लेते हैं। तब पूरा गांव ही परिवार की परिधि में आता था। किसी के घर कोई समारोह हो, किसी प्रकार की कमी हो गांव का हर व्यक्ति उसमें शरीक होकर अपना अंशदान करता था। किसी की बेटी की शादी हो तो पूरा गांव अपनी बेटी की तरह बारातियों के स्वांगत, मान-दान में एकजुट खड़ा नजर आता था। यह वह समय था जब हमारे संस्कारों में एक-दूसरे के लिए सहयोग की भावना थी। अपने सुख दुख को बांटकर जीने की उदात्तता थी।

अपने जीवन के उदाहरणों से बता सकता हूं कि कैसे परिवार में बड़े-बूढ़े सम्मानीय होते थे। मेरा बड़ा लड़का आज भी मुजे पापा न कहकर 'भाईजी' कहता है क्योंकि बचपन से ही वह सबको मुझे भाईजी कहते सुनता रहा और वही उसके मन में बैठ गई।

जब तब मेरे पिता जीवित थे घर के बच्चों के असली अभिभावक वही थे। बच्चे भी उनकी छत्रछाया में रहना पसंद करते थे। घर में कोई अच्छी चीज आए तो बच्चे दादाजी को बिना दिए उसके उपयोग पर हो-हल्ला मचाते थे चाहे वह अच्छी कलम हो, घड़ी हो, साजोसामान हो या खाने का पदार्थ। हम उम्र में बड़े होकर भी बच्चों के दादा-स्नेह का अतिक्रमण करने की हिम्मत नही जुटा पाते थे।

वक्त बदला। सोच के तौर-तरीके बदले और इसके साथ ही बदल गया संस्कारों का वह सुनहरा चदर जो हमें सुरक्षित रखता था।

पिछले कई वर्षों से हर समाज में काफी परिवर्तन है, खासकर नई पीढ़ी में। पूरी दुनिया में संचार क्रान्ति के फलस्वरूप जीवन जीने की शैलियों में बदलाव आ गया है। एक समाज सामूहिक विकास को तरजीह दी जाती थी लेकिन उसका स्थान व्यक्तिगत विकास ने ले लिया। संयुक्त परिवार की परिभाषा भी बदल गई। गांव भर को परिवार मानने की बजाय पहले तो अपने खून के संबंधों तक को परिवार माना गया और अब सिर्फ पति-पत्नी एवं बच्चे ही परिवार कहलाते हैं। दादा-दादी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई तक परिवार की परिधि से गायब हो गये।

संयुक्त परिवार की इस सिकुड़न का नतीजा यह हुआ कि बच्चों के संस्कार बदल गये। परिवार की छोटी परिधि में बच्चे अपने माता-पिता, भाई-बहन से ही खुश रहने लगे।

आज माता-पिता भी बच्चों को दादा-दादी के पास न छोड़कर साथ ही घूमने के लिए ले जाते हैं या एक प्रवृत्ति और देखने में आई है कि बच्चों को नाना-नानी के पास छोड़कर माता-पिता बाहर जाते हैं।

यह कलह का कारण भी बनता है। आखिर वंशपरम्परा के नियमों के मुताबिक पिता अपने बच्चे में अपने वंश के संस्कार ही देना चाहता है पर माता की जिद के चलते अगर बच्चा नाना-नानी की परिवरिश में रहता है तो संस्कार भी उसके वहीं के बनते हैं।

हम हरियाणा और राजस्थान के निवासियों को अच्छी तरह पता है कि जब तक हमारे यहां संयुक्त परिवार का प्रचलन था, समाज में समृद्धि थी। एक छत के नीचे रहने का सुपरिणाम यह था कि सबके मन में एक-दूसरे के प्रति लगाव था। पुरुष सदस्य उपार्जन करते थे, महिलाएं घर संभालती थी। दादा-दादी तब बच्चों के वास्तविक अभिभावक होते थे। वे अपना अनुभव, ज्ञान बच्चों को देकर उन्हें इस तरह तैयार करते थे कि भविष्य में बच्चा अपने परिवार व समाज के हित में जितना संभव हो सकता था, करता था।

आज पश्चिम की अंधाधुंध नकल करने में रत नई पीढ़ी अपने बच्चों में पारिवारिक, सामाजिक, संस्कार का विकास कर ही नहीं पा रही। सुख-समृद्धि की चाह में माता-पिता दोनों ही व्यापार या नौकरी से जुड़े रहे हैं, खाली समय में वे घूमना-फिरना पसंद कर रहे हैं, ऐसे में उनके बच्चे या तो घर के नौकर-नौकरानियों की देखरेख में रहते है या किसी आरै के। विद्यालयों में भी संस्कार पर जोर देने की प्रथा खत्म हो चुकी है।

इस तरह एक संस्कारविहीन पीढ़ी का निर्माण हो रहा है और हम यह अच्छी तरह जानते है कि बिना संस्कार के मनुष्य धनी तो हो सकता है, यशवान नहीं हो सकता।

पहले हमारे समाज के लोगों के पास आज की तरह धन अगर नहीं भी था तो संस्कार था और इसी के बूते उन्होंने राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान कायम की पर आज शिक्षा, धन, साधन सब होते हुए भी संस्कार का अभाव है जो दुखद है।

हमें अपने भविष्य की संतति के लिए ही सही इस मुद्दे पर गंभीरता से सोचना होगा ताकि समय रहते हम अपने सामाजिक ढांचे को पुन: चुस्त-दुरूस्त कर सकें।●

अन्तर्जातीय विवाह-चिन्ता नहीं आत्म चिन्तन का विषय है

✍ राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

आंध्र प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के बुलावे पर पिछले दिनों हैदराबाद जाने का सौभाग्य मिला जहां १९ फरवरी को तो हमारी राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग थी एवं बीस को प्रादेशिक सम्मेलन था। दोनों ही कार्यक्रम सफल रहे लेकिन एक कार्यक्रम ने मेरा ध्यान बहुत अधिक आकृष्ट किया और वह था- 'मारवाड़ी समाज में अन्तर्जातीय विवाह।'

इस परिसंवाद का नेतृत्व वहां की महिला सम्मेलन के हाथों में था। महिलाएं विवाह व्यवस्था के केन्द्र में है इसलिए उनका यह आयोजन बाकई दिलचस्प था। दूसरी बात मारवाड़ी महिलाएं, जिनके लिए रूढ़िवादी, धार्मिक और दिखावटी जैसे शब्द सहज ही प्रयुक्त होता है उनका इस तरह के गंभीर विषय पर चर्चा के लिए एकत्रित होना भी आश्चर्य में डाल रहा था।

बहरहाल परिसंवाद अपनी विषयवस्तु के अनुरूप ही रोमांचक और जानकारी प्रदान करने वाला रहा। सभी वक्ताओं ने इस विषय की गंभीरता को स्वीकार करते हुए चिंता प्रकट की थी। एक नजर में यह चिन्ता का विषय है भी कारण अन्तर्जातीय विवाह हमारी परम्परा में प्रयुक्त मूल, गोत्र, खानदान की सीमाओं को नहीं मानता। इसमें तो मन का मेल प्रमुख होता है चाहे वह किसी भी भाषा, जाति, धर्म के युवक-युवतियों में हो। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी है और वह इतना व्यापक है कि उस पर गंभीर आत्म चिन्तन की आवश्यकता है।

हम मारवाड़ी भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अनुरूप ही विकसित हुए है इसलिए सांस्कृतिक स्तर पर हम अन्य भारतीय समाजों से इतर नहीं हो सकते। हां, स्थानीय संस्कृति में विविधता स्वाभाविक है।

आज की भारतीय संस्कृति क्या अपने मूल स्वरूप में है?

नहीं । सदियों पहले की संस्कृति और आज की संस्कृति में जमीन आसमान का अंतर है और इसी अंतर ने इसे विशिष्ठ भी बनाया है। खासकर हिन्दू समाज का लचीला स्वरूप सांस्कृतिक परिवर्तनों के माध्यम से ही बना है। मारवाड़ी भी इसके अपवाद नहीं है।

वर्तमान हिन्दू समाज की उपमा गंगा की धारा से दी जा सकती है। छोटी बड़ी अनेक नदियां चारों दिशाओं से सैकड़ों कोस की यात्रा करके इसमें मिली है परंतु मिलने पर सब एक हो गई है, उनका एक नाम हो गया है। नदी में जल की जो मात्रा है, उस जल में जो वेग है, वह इन सब नदियों की सम्मिलित देन है। पर इन सब जलराशियों के बीच में वह मूलधारा है जिसमें आकर यह सब मिली है और यह मूलधारा है- अपनत्व की भावना।

अनेक जातियों का समुच्चय आज हिन्दू समाज कहलाता है, अनेक संस्कृतियों के योगफल का नाम हिन्दू संस्कृति है और यह सब सिर्फ अपनत्व की उदात्त भावना के चलते ही संभव हुआ है।

जहां तक मारवाड़ी समाज की बात है तो यह समाज अपने मूल स्थान से विस्थापित होकर यायावरी के माध्यम से व्यापार-वाणिज्य करने वालों का समाज है इसलिए इसकी संस्कृति भी हिन्दू संस्कृति की तरह ही अनेक संस्कृतियों का मेल है।

अन्य हिन्दीभाषी समाजों से यह समाज सोच के स्तर पर थोड़ा भिन्न है तो इसलिए कि इस समाज में सुधार के आन्दोलन दशकों चले हैं। पुरानी अवधारणाओं की जगह नई अवधारणाओं को ग्रहण करने की प्रवृत्ति भी रही है। इसलिए अन्तर्जातीय विवाह जैसे मुद्दे पर चिन्तित होने की बजाय इस पर गंभीर आत्म चिन्तन किया जाना चाहिए।

इतिहास के पन्ने पलटें तो पाएंगे कि भारत के हिन्दू राजाओं ने भी राज्य विस्तार के क्रम में अन्तर्जातीय विवाह किये एवं उसे सामाजिक स्वीकृति भी मिली। मौर्य वंश के सम्राट चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस की पुत्री हेलेना से शादी की और उसी वंश के विस्तार में महान सम्राट अशोक पैदा हुए तो क्या हम अशोक को हिन्दू न कहें।

आज वैश्वीकरण और बाजारीकरण का दौर है। सूचना तकनीक में हुए क्रांतिकारी बदलावों ने पूरी दुनिया को एक गांव बना दिया है। ऐसा गांव जहां जाति, धर्म, सम्प्रदाय यहां तक कि संस्कार का भी कोई मूल्य नहीं है। हर घर एक बाजार है, हर व्यक्ति एक खरीददार। ऐसे में सूचनाओं की जो आंधी चल रही है उसमें कब तक हम अपने पुराने मूल्यों, आस्थाओं के साथ टिके रह सकेंगे?

आज के युवक और युवतियां शिक्षित हैं, प्रतिभावान है एवं सूचनाओं से लैस भी। वे जो भी करते हैं अपनी दृष्टि से उस पर चिन्तन के बाद ही करते हैं। वंश परम्पराएं उसके आड़े नहीं आती।

इसलिए अन्तर्जातीय विवाह को किसी भी समाज में रोकना संभव नहीं है। हां, विद्यालयीन जीवन में एवं घर पर संस्कारों की शिक्षा देकर एक हद तक इसकी रफ्तार रोकी जा सकती है। हालांकि व्यक्तिगत रूप से मैं अन्तर्जातीय विवाह का पक्षधर हूं। मेरा मानना है कि एक मनुष्य के रूप में प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवनसाथी स्वयं चुनने का अधिकार है। कोई दूसरा, चाहे वह माता-पिता ही क्यों न हो जब जीवनसाथी का चुनाव करता है तो उसमें विसंगति की संभावना रह जाती है।

अन्तर्जातीय विवाहों की खामियां-कमियां चाहे जो हो पर एक कैंसर के उपचार में तो उसने सफलता पा ही ली है और वह कैन्सर है- दहेज, जिसे हमारे समाज ने इतना जटिल एवं पीड़ादायक बनाकर रख दिया है कि उसका खात्मा वक्त की जरूरत हो गई है। प्रेम की सौदेबाजी से बेहतर तो मन का मन से मिलन है। अगर समाज अन्तर्जातीय विवाहों के मार्ग में बाधा डालने की नीयत से ही सही दहेज को खत्म करने का साहस दिखाए तो उसका स्वागत है।●

नैतिकता से विहीन होती जा रही भारतीय राजनीति

हमारा लोकतंत्र सक्षम कैसे बने?

✍ केवलचंद जैन, बैंगलोर

अमरीका यूरोप व जापान में भी भारत की तरह लोकतंत्र है, लोकमत से ही सरकारें बनती हैं, जो सरकार बनती है सक्षम व स्थिर होती है, किसी की उठापटक व हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति वहां नहीं है जो सत्ता में आ जाते हैं उनका मकसद मात्र सुचारू प्रशासन देना व राष्ट्र उत्थान के लिए कार्य करना होता है। लोकतंत्र के पूर्व राजा महाराजाओं की शासन सत्ता बपुति व वंशवाद की धरोहर मानी जाती थी जो लोकतंत्र में मान्य नहीं है। अमरीका में दो बार से अधिक राष्ट्रपति पद पर कोई नहीं रह सकता जो दस साल का कार्यकाल होता है। अमरीका अथवा यूरोप में कोई राष्ट्रपति हो अथवा प्रधानमंत्री नई सरकार को सत्ता सौंपने के पश्चात् न किसी प्रकार का हस्तक्षेप करते न किसी प्रकार की सरकारी मामले में उनकी आवाज होती है, जैसे अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति या ब्रिटेन की भूतपूर्व प्रधानमंत्री आदि। जो भी सत्ता से मुक्त हो गये दुबारा सरकार के कार्यों में अपना सिर नहीं खपाते न अपने परिवार के सदस्यों को सत्ता में लाने हेतु अपनी राजनीति चलाते, जबकि भारत में जो नेता या अभिनेता सत्ता में आ जाते हैं तो वे परिवारवाद की परम्परा को बखूबी निभाने का प्रयास करते हैं। यहां तक कि अपने जीवनकाल में बेटे को मंत्री व पोते को विधायक अथवा संसद सदस्य बना कर ही संसार से विदा होने की अभिलाषा रखते हैं।

लोकतंत्र में कोई भी पार्टी व्यक्ति विशेष पर आधारित नहीं होनी चाहिए बल्कि सिद्धान्त व नीतियों पर आधारित कार्यक्रम बनाने वाली पार्टी ही राष्ट्रहित में कार्य कर सकती है। विश्व के सबसे बड़े भारत के लोकतंत्रीय राष्ट्र के लिए योग्यता, अनुभव व मंजे हुए तथा जमीन से जुड़े नेताओं की आवश्यकता होती है, जो आम आदमी की समस्या व जरूरत को समझ सके। भारत की आजादी के आन्दोलन में ऐसे ही नेता महात्माजी के नेतृत्व में एक जुट हो गये थे जिन्होंने देश को आजाद करवा कर गणतंत्र की स्थापना की। ऐसे अंतिम समर्पित देश के नेता के रूप में जयप्रकाश नारायण व लालबहादुर शास्त्रीजी की सेवाएं देश को उपलब्ध हो पायी थी।

वर्तमान में अटलजी जैसे नेता देश को प्रधानमंत्री के रूप में उपलब्ध थे, उन्हें भी सुचारू रूप से प्रशासन चलाने में कई दुविधाओं से गुजरना पड़ रहा था जो सर्वविदित है। देश में वैसे पार्टियां बहुत है पर जो बड़ी राष्ट्रीय स्तर की पार्टी है उनमें भारतीय जनता पार्टी एवं कांग्रेस है, जो देश में अपनी बहुमत की सरकार बनाने की क्षमता रखती है। अत: जनता की अपेक्षा होती है कि उनके नेता पद पर योग्य अनुभवी व देश की समस्याओं से निपटने की क्षमता रखने वाले व्यक्ति का चुनाव हो तभी लोकतंत्र सुरक्षित रह सकता है व राष्ट्रहित में कार्य हो सकता है। राष्ट्र सर्वोपरि है, फिर आती है पार्टी व सरकार यह ध्यान में रखकर ही हमें सोचना चाहिए।●

अर्हम्

अनुशासन को पचा सके हम
जठर अग्नि का तेज चाहिए

बाधाओं को हटा सकें हम
गण नायक का हेज चाहिए।

कटु भावों को भुला सकें हमें
विस्मृत का वरदान चाहिए।

लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरन्तर
सम्यक स्मृति का भान चाहिए।

आत्म विजय के लिए चिरंतन
आत्मार्पण का भाव चाहिए।

ज्ञानवृद्धि के लिए सनातन
श्रद्धा का स्वभाव चाहिए।

शब्दों में हम उलझ न जायें
भावों का आलोक चाहिए।

भावों को चिरजीवी रखने
शब्दों की निर्मोक चाहिए।

अक्षर को प्रणाम से साभार

जिन्दगी

मिलने बिछुड़ने का नाम है जिन्दगी
बनने बिगड़ने का नाम है जिन्दगी

इक आंख में अंधेरा, दूजे में है रोशनी
कभी धूप कभी छांव है जिन्दगी!

जो पल साथ है वही बस है अपना
उसे संवारो तो सुरधाम है जिन्दगी!

सफर का साथ तो बस है सफर तक का।
वैसे तो हर मोड़ पर अनाम है जिन्दगी!

रोने से मुश्किलें आसां नहीं होती।
हंसो तो सबेरा, नहीं तो शाम है जिन्दगी!

- डा. लखवीर सिंह 'निर्दोष'

प्रश्न तीन, तेरह व तीस का

✍ राजेन्द्र शंकर भट्ट, जयपुर, भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

उत्पादक होते हैं, उद्योग होते हैं, और उपभोक्ता होते हैं। इनके बीच कितने होते हैं, इसकी गिनती सामान्यत: सबके सामने आ नहीं पाती, लेकिन इन सबकी आजीविका और लाभवृत्ति का प्रभाव दोनों ओर रहता है - उत्पादक और उद्योग उनका उपयोग करते हैं, और उन पर होने वाले व्यय का भार उपभोक्ताओं को उठाना पड़ता है। इसमें अनापसनाप कमाई को रोकने के लिए नियम यह बना कि डिब्बा बंद चीजों के दाम उन पर अंकित रहें। लेकिन इससे उपभोक्ता के प्रति समानता नहीं आई है। दिन प्रतिदिन के उपयोग की एक चीज मैं खरीद कर लाया, जिस पर दाम छपे थे- तीस रुपये, मुझे मिली तेरह में। और वही चीज मुख्य बाजारों में तीस रुपये में बिक रही थी और उस पर छपे मूल्य को देखकर लोग तीस रुपये को ही उचित भाव मानकर उसकी खरीद कर रहे थे। मैं गली की एक छोटी दुकान से खरीद कर लाया था, जो सभी चीजें उन पर अंकित मूल्य से कम पर बिक्री के लिए ही जानी जाती है। ऐसी दुकानें हर शहर में बहुत हैं, लेकिन आमतौर से बिक्री ऐसी दुकानों पर होती है जहां उन पर अंकित मूल्य पर ही लोग खरीदारी करते हैं।

यह जो स्पष्ट धोखा तीस और तेरह रुपये के बीच है, उसे अनुचित व्यापार प्रबन्ध भी नहीं माना जा रहा- धड़ल्ले से यह चल रहा है, जबकि इसे गंभीर आर्थिक अपराध माना जाना चाहिए- जो उसी चीज को तीस रुपये में बेचते हैं वे तो बिक्री बिक्री ही में सत्रह रुपये अनुचित रूप से कमा रहे हैं। किसी का इस ओर ध्यान नहीं है, जबकि लाभ कुछ ही उपभोक्ता प्राप्त करते हैं, और नुकसान ज्यादा लोग उठा रहे हैं।

लेकिन इससे निकलकर भी यह विचारणीय विषय है। तीस की चीज जो तेरह में मिलती है, वह उत्पादक के यहां से कितने में निकलती होगी, उसको लाभ कितना मिलता होगा, उसकी लागत कितनी होती होगी- जबकि उद्योग और उपभोक्ता का ही सीधा संबंध है, दोनों के बीच कोई धोखा नहीं होना चाहिए। कीमत चाहे जितनी निर्धारित की जाए, उस पर बिकने वाली वस्तु उस मूल्य के योग्य होनी चाहिए- यहां बिकने वाली चीज तेरह रुपये की तीस रुपये में है। व्यापारिक व्यवस्था की यह परिस्थिति आजकल 'स्वतंत्र व्यापार' के नाम से चल रही है, जिससे जितना बने लाभ कमाये। इसे ठीक मानने पर भी जो तेरह और तीस रुपये के बीच का धोखा है उसके लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। इसमें यह प्रश्न उठेगा कि बेचने वालों को भी यह अधिकार है कि वह चाहे जितना लाभ उठाये, कुछ कम लाभ पर व्यापार करते हैं, कुछ दुकानों की शान-शौकत करके उच्च वर्ग के उपभोक्ताओं को आकर्षित करते हैं- इस पर वे सत्रह रुपये लेना चाहते हैं। नहीं, यह चलने योग्य प्रक्रिया नहीं है। व्यापार में शुद्धता के लिए मूल्यांकन की व्यवस्था लागू की गई थी, जब मूल्यों में इतनी असमानता है तो यह समस्त व्यवस्था संशोधन के योग्य हो गई है। कोई इस पर विचार नहीं कर रहा, इसीलिए इसे उचित नहीं माना जा सकता। परन्तु उचित अनुचित के बीच के अन्तर को समाप्त करने की न शासनिक व्यवस्था, न सामाजिक व्यवस्था, इस समय कारगर है, इस ओर आंख मूंदने की विधि सभी ने अपना रखी है।

भारत की अर्थव्यवस्था, जिन दिनों भारत स्वतंत्र, समृद्ध तथा सुयश में था, प्राचीन समय में, आधारित इस प्रबंध पर थी कि व्यापार जिन वस्तुओं का होता था, उनके उत्पादकों, उद्योगों, व्यापारियों पर कड़े प्रतिबंध थे, निर्धारित था कि किस प्रकार की वस्तु की बिक्री से कितने प्रतिशत लाभ उठाया जा सकेगा। सोना भी बिकता था, अनाज भी बिकता था, लोहा भी बिकता था, हर एक से लाभ प्राप्त करने पर निर्धारण था कि किसके व्यापार पर लाभ कितने प्रतिशत प्राप्त किया जा सकता है- यह प्रतिशत की दर भिन्न-भिन्न वस्तुओं पर अलग अलग थी। शासन का प्रबंध और भय का, जो निर्धारित था, उससे अधिक का अर्जन संभव ही नहीं था। और देश में सभी वर्ग संतुष्ट थे, भारत समृद्ध था, सोने की चिड़िया माना जाता था, भारतीय वस्तुओं की शुद्धता और उनके मूल्य की प्रामाणिकता थी, विदेशों से भी खूब व्यापार होता था। तब धन-अर्जन बाधित नहीं था, नियमित था। इस समय बिना नियम उन वस्तुओं में भी व्यापार हो रहा है जिन पर उनका मूल्य अंकित होता है। यह धोखा हो सकता है, जो भी शायद नहीं है। किसी धोखे को व्यापार नहीं कहा जा सकता, लेकिन इसे औचित्य और प्रतिष्ठा नहीं माना जा सकता।

यह व्याप्त इतना है कि देश की स्वतंत्रता और शासनिक व्यवस्था संकट में पड़ गई है- स्वतंत्रता और तीस रुपये अंकित वस्तु का क्या संबंध है, यदि स्वतंत्रता में संतोष, औचित्य, विश्वास और सम्मान नहीं होता तो इससे लगाव नहीं रह सकता, और जिस स्वतंत्रता से उसका उपभोग करने वालों का लगाव नहीं होता, उसकी प्रतिष्ठा नहीं होती - कितना असन्तोष आजकल व्याप्त है, और उसकी रक्षा भी नहीं हो सकती, कहां है वह उत्साह देश के प्रति जो स्वतंत्रता संग्राम के समय था?

जो व्यापार-उद्योग में लगे हैं, और जो उनके उत्पाद के उपभोक्ता हैं, उन्हें दोनों के बीच की सभी प्रक्रियाओं और प्रबंधों की विवेचना करनी होगी। हमारे संविधान ने जिस समता का प्रतिपादन किया है, वह सामाजिक व्यवस्था में औचित्य की स्थापना के बिना संभव नहीं है, जिसमें व्यापारिक व्यवस्था भी आती है।

इसे एक क्षण के लिए छोड़ भी दें, तो भी यह प्रश्न रहेगा कि अनौचित्य से आदर निर्मित नहीं हो सकता। जो उद्योग, उत्पादन और व्यापार में लगा वर्ग है उसकी धनाढ्यता बढ़ी है, परन्तु उसकी प्रतिष्ठा कम हुई है, कम क्या हुई है, शून्यवत हो गई है- सभी एक दूसरे की लूट में लगे हैं, जिसके अंतिम छोर पर उपभोक्ता है। बीच में शासनिक कर्मचारियों का वर्ग है- जिसकी उपेक्षा और जानबूझकर अनुचित अर्जन की चेष्टाओं के कारण ही व्यापार व्यवस्था में अनौचित्य का अस्तित्व है। सभी का सम्मान रहा है- राजा को देवता माना जाता था, उनमें ऐसे दानव हो रहे हैं कि उनके लिए हर एक जेल भी उपयुक्त नहीं रही, खास जेल में भेजना पड़ता है, वे जेलों को भी अशुद्ध करके उन्हें अपने दरबार का प्रांगण बना लेते हैं। व्यापारियों को महाजन माना जाता था, कहा जाता था कि उन्हीं के मार्ग पर चलो।

ये पौराणिक प्रसंग मात्र नहीं है। मनुष्य के समस्त उपक्रम मनुष्य को ऊपर उठाने के लिए होने चाहिए। यदि मनुष्यता का ह्रास होता है, तो मनुष्यता इसमें है कि उस प्रक्रिया को सुधारा जाए। मनुष्यता के बिना मनुष्य जीवन जीने योग्य नहीं होता।●

बसंत आते-जाते

✍ श्रीमती कोमल अग्रवाल, जूनागढ़ (उड़ीसा)

ट्रेन चल रही है तेज गति से और चल रहे हैं **बाला** के विचार भी उसी तेज गति से। अचानक वह तेज रफ्तार धीमी होने लगी। **बाला** न जाने किन खयालों में विचर रही थी कि अन्तरात्मा में उसे अनुभव हुआ कि जैसे ये रेलगाड़ी 'रेलगाड़ी' नहीं है, जीवन की चलती-फिरती मिसाल है कभी इसकी गति तेज होती है, कभी धीमी तो कभी रुकी-रुकी-सी प्रतीत होती है। बाला में स्वप्न से जागृत होने का भाव उभरने लगा परन्तु उसकी चेतना, उसका मस्तिष्क उसे अपने ही जीवन का विश्लेषण करने की दिशा में खींचने लगा और खिंचती चली गई वह ठीक उसी प्रकार जैसे ग्यारह वर्षों पहले सुभाष के आकर्षण में खिंचती चली गई थी।

यद्यपि विवाह के लिए १८ वर्ष की आयु आधुनिक परिवारों में कम मानी जाती है, परन्तु फिर भी बाला का विवाह अठारह वर्ष में उसकी दादी मां की जिद पर कर दिया गया था। पहली मुलाकात में ही सुभाष ने बाला को पसंद किया था और सगाई केलिए अपने घरवालों को मना भी लिया था। इस तरह लड़के की जिद के आगे एक ऊंचे धनी परिवार का नाता एक दीन-हीन मध्यमवर्गीय घराने से जुड़ गया। उच्च शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर होने का स्वप्न देखती बाला ने जीवन से समझौता कर सुभाष के साथ अपने सुखमय जीवन के सपने बुनने शुरू किये थे। जीवन में अचानक आई इस रौशनी को बाला ने सुबह का उजाला समझा था और सुभाष के बढ़े हुए हाथों को थाम लिया उसकी जीवन सहचरी हो जाने के निमित्त पर नियति में कुछ और ही लिखा था। ससुराल की दहलीज पर रखा पहला कदम जहां आशीर्वाद का माध्यम होता है वहीं बाला ने पाया तिरस्कार व उपेक्षा से भरा तमाचा और फिर शुरू हुआ यातनाओं का सिलसिला। कलियुग की मंथरारूपी सास व सास के कहेनुसार चलने वाले आज्ञाकारी पुत्र को जब दहेज में सुंदरता व संस्कार के अलावा कुछ न मिला तो पासा पलट गया और पलट गया सुभाष भी अपने प्रेम से। बाला को अपने दायरे से एक इंच कदम बाहर निकालने की अनुमति नहीं थी। विशाखापटनम के स्वच्छन्द माहौल में पली-बढ़ी बाला काशीपुर के उस लम्बे-चौड़े घर में खूंटे से बांध दी गई। उसके माता-पिता अपनी सामर्थ्य से भी अधिक धन देते, लेकिन दहेज की भूख मिटी नहीं और इसी भूख ने उसे एक नहीं कइयों बार आत्महत्या के कगार पर ला खड़ा किया। डेढ़ वर्ष इसी में गुजर गए फिर बाला के जीवन में एक नन्हीं सी किरण आई वह गर्भवती हुई, लेकिन उस पर होने वाले शारीरिक अत्याचार कम नहीं हुए। जो प्रहार सुभाष ने उस नाजुक मौके पर बाला पर किया वह न तो बाला का अंश सह सका और न हीं बाला के माता-पिता। अबार्शन की स्थिति में ही वे उसे अपने साथ विशाखापटनम लिवा ले गये। काफी दिनों तक दोनों परिवारों के बीच तनातनी का माहौल रहा। स्थिति थोड़ी सामान्य हुई तो हर दूसरे-तीसरे दिन सुभाष या उसके घर वाले फोन करके उसे मानसिक रूप से परेशान करते या कोई न कोई आकर गुप्ता परिवार को नसीहतें देने लगता। स्थिति इतनी प्रतिकूल हो गई कि माता-पिता के अलावा हर कोई बाला को ससुराल भेजने के पक्ष में हो गया। फिर माता-पिता की सहमति से बाला ने तय किया कि वह वहां नहीं रहेगी जहां उसकी वजह से उसके माता-पिता को लोगों के ताने सुनने पड़े। विजयनगरम के अंग्रेजी माध्यमिक स्कूल में की गई उसकी कोशिश ने उसे शिक्षिका की नौकरी दिलवा दी। छः महीने गर्ल्स होस्टल में गुजारने के बाद वहां की मशहूर स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. मीरा नायक की मित्रता उसे उन्हीं के घर किराएं पर रहने को ले गई।

''सुभाष ने मेरे साथ बहुत ज्यादती की। मैंने उसके लिए अपना वजूद तक मिटा डाला, लेकिन उसने मेरे साथ जानवरों सा व्यवहार किया। मैंने सोचा था कि कभी तो वो मेरे दर्द को समझेंगे लेकिन मेरी इन्हीं उम्मीदों ने मुझे और तकलीफ दी। उन्होंने मुझे जीते जी मार दिया''- और अचानक बाला सिसकने लगी। उसकी आंखों से आंसुओं की रेखाएं बह रही थीं। वह नीरज था, डा. मीरा का छोटा भाई, जिसने बाला के दुख को कम करने का प्रयास किया था। सांवला सलोना, जिंदगी की भरपुर ताजगी अपने चेहरे पर लिए नीरज बाला के जीवन में कब प्रवेश कर गया, बाला जान ही न पाई। दवाइयों की दुकान का मालिक नीरज अपने बहन-बहनोई के साथ उसी के घर में रहता था। आते-जाते उसका बाला के सामने पड़ जाना स्वाभाविक ही था। स्कूल आते-जाते वक्त बाला को अक्सर लगता कि दो आंखें उसका बराबर पीछा कर रही है। फिर नीरज ने ही उसकी तरफ अजनबीपन को मिटा देने वाला दोस्ती का हाथ बढ़ाया था।

बाला के सूने मन में एक चेहरा उभर रहा था और उसी चेहरे ने एक दिन बातों-बातों में कहा था - ''मैं तुम्हारे चेहरे पर हंसी देखना चाहता हूं, इस गहराती उदासी को मिटा देना चाहता हूं, सच कहूं तो तुम्हारे जीवन का अंधेरा बांटना चाहता हूं।''

उस समय तो बाला खामोश रह गई थी पर नीरज के बार-बार कहने पर उसे उत्तर देना ही पड़ा था - ''जानकर अच्छा लगा कि कोई मेरे जीवन का अंधेरा बांटना चाहता है, लेकिन मैं अपनी वजह से किसी और के जीवन को अंधकारमय नहीं कर सकती। कुछ सोचने-समझने के लिए परिवार और समाज की सहमति भी अनिवार्य है।''

बाला ने कहा था, लेकिन इनकार से प्रेम खत्म नहीं हुआ, उसकी लौ और दीप्तिमान हुई और बाला को उस सच्चे प्रेम के आगे नतमस्तक होना ही पड़ा।

जो पहला प्यार उसके जीवन में सुबह की रोशनी बनकर आया था वह चार महीनों के अंतराल में ही उसका सब कुछ अपने साथ बहा ले गया। दोनों दीन-दुनिया से बेखबर, अपना घर बना रहे थे, एक-दूसरे के बिना जीना किसी को मंजूर न था परन्तु जब बाला के परिवार वालों को इस बात की खबर हुई तो उनकी पहली

प्रतिक्रिया समाज में होती बदनामी का भय था। बाला का प्रेम समाज में कलंक माना गया, चारों ओर बातें होने लगी। इसी नाजुक मौके पर सुभाष ने बाला से अपने किये की माफी मांगी थी।

''मैं तुम्हें अपने साथ ले जाने आया हूं। मैं मानता हूं कि मैंने बहुत बड़ी गलती की है, लेकिन मैं तुमसे और सबसे वादा करता हूं कि ये गलती मैं दोबारा नहीं करूंगा। तुम्हारे चले जाने के बाद मुझे अहसास हुआ कि तुम मेरे लिए क्या मायने रखती हो।'' सुभाष रुंधे स्वर में बोला और फिर उसकी आंखों से आंसू बह निकले। बाला स्तब्ध रह गई। घर के सभी बड़ों की उपस्थिति में सुभाष का पश्चाताप पुरानी सभी बातों को धो गया। त्रासद माहौल में हुई दो दिनों की बातचीत में सबने तय किया कि एक बार सुभाष की बातों पर विश्वास करना ही ठीक रहेगा और वैसे भी लड़की को मायके में कब तक बिठाकर रखा जा सकता है।

सुभाष के साथ बाला का चले जाना नीरज को गहरे तक तोड़ गया और बाला, उसने तो स्वयं को भगवान भरोसे ही छोड़ दिया। इसी बीच सुभाष के पिता का देहांत हो गया। पिता की कोई वसीयत न होने की वजह से तीनों बड़े भाइयों ने सुभाष को छोटा और कमजोर समझ घर से निकाल बाहर किया। किराए की छत के नीचे ही बाला ने नन्हें से अंशुल को जन्म दिया था। भाइयों के खिलाफ किये गये केस के फैसले से सुभाष को पिता की जायदाद में एक चौथाई हिस्सा मिल गया, लेकिन इस हिस्से ने बाला की जिंदगी के कई हिस्से कर दिये और फिर बाला के जीवन में संकट को गहरा कर देने वाली वह शाम भी आई जब सुभाष को अस्पताल ले जाया गया।

कुछ जानने-समझने की स्थिति में आने से पहले ही बाला की आंखों के समक्ष ही सुभाष खून से लथपथ, दर्द से तड़पता हुआ इस दुनिया से चला गया। जीवन का इतना भयानक रूप भी होता है यह बाला ने सिर्फ पढ़ा-सुना था और तब देख भी लिया। किसी ने इसे महज ट्रक चालक की लापरवाही बताया तो कइयों ने दबे स्वर में भाइयों का बदला, पर रुपयों की चमक ने अपने पीछे सारी क्रूरता समेट ली।

चलती ट्रेन में बाला कुछ क्षण बाहर खिड़की से देखती रही पश्चिमी आकाश पर एक कोने में गोलाकार पीलापन विलीन हो रहा था। आसपास धुंए से लाल, कत्थई और बैंगनी धब्बे कसमसाते हुए हर पल अपनी छाया बदल रहे थे।

''कल का दिन उसकी जिंदगी का सबसे ऐतिहासिक दिन होगा।''

'सचदेवा मिशनरी इंग्लिश स्कूल' में कल उसे प्रिंसिपल का पदभार संभालना है। यह उसकी जिंदगी की नई शुरूआत होगी।'

छह साल के अंशुल को वह उसके ननिहाल कुछ दिन रहने को छोड़ आई है वापस उसी जगह जा रही है जहां उसने अपने जीवन के सर्वाधिक सुनहरे छह वर्ष काटे हैं जहां उसने चार बसंत देखे हैं प्रेम का, विरह का, असफलता का और सफलता का।

''जीवन में कोई इच्छा अधूरी रह जाए तो ईश्वर पर विश्वास बना रहता है -'' उसे नीरज की कही बात याद आई। फिर उसने खिड़की से आसमान की ओर देखा और बुदबुदाई, ''लेकिन ईश्वर, कहां मैंने तुमसे चांद मांगा था। तुमने टूटा तारा भी मेरी झोली में नहीं डाला।''●

गीत

थारो आणो बण्यो न ओजूं,
जुगां-जुगहां सूं-
म्हारो खुल्लो बारणो।

गुमसुम बैठ्यो
आंख न मींची
रात्यूं सोच्यो
कविता सींची
बांधण खातर छंद, करूं तो
मौन पड़ै है धारणो
म्हारो खुल्लो बारणो।

दिवलो निंदग्यो
खिंडग्या तारा
चेतै आवै
सब उणियारा
सांस-निसांसां उकळीजतां
ओखो मन नै ठारणो
म्हारो खुल्लो बारणो।

अेकर आयां बात बणीजै
बात बणीजै
पड्यो अधकलो
महल चीणीजै
गीतांळै मारगियै नै भी
पड़सी राम संवारणो
म्हारो खुल्लो बारणो।

- किशोर कल्पनाकान्त

अर्थ

अर्थ का भी जीवन में अवदान है
अर्थ सदजीवन की सोपान है।
शब्द में अर्थ है तो बेहतर है जिन्दगी
मिलती है राहत धड़कनों को निहारे तो पायेंगे
हर तरफ खुशियां हैं छायी हुई
अर्थ साधन है इसे अपनाइये
सद्प्रयास, सदचिन्तन से सदुपयोगी बने
यह विचार कर अर्थ का सद उपार्जन कराईये।।

- नरेन्द्र कुमार बगड़िया

चोखाराम - वाह, वाह

✍ निर्मोही व्यास, बीकानेर

नापासर में सेठ धनीराम जी री मोटी ढाढी हवेली। जिकी सदा आभै सूं बातां करै। धन्ना सेठां में धनीरामजी रो नांव सरू सूं सिरमौर रैयो। हवेली में बड़ता ही च्यारूमेर लिछमी जी साकसात बिराजती निजर आवै।

आखै गांव में सेठजी रो आछो-खासो मान। संकट पड़यां हर कोई मदद सारू बांरी ही चौखट चढ़ै। ब्याजूंणा उधार देवण में सेठां री एक न्यारी ही साख ही। हजार-डेढ़ हजार सूं बत्ती कीं नै उधार नीं देंवता, जिण कारण पईसो पूठो आवण में कोई दिक्कत नीं रैंवती। जे कठै आंवती भी तो अडाणै पड़ी चीज नै जब्त करणै रो डर दिखाय देंवता। कैवै बतावै, सेठां रै अठै लोगां रा दस किलो गैणां अडाणै मेल्योड़ा है। बाकी चीजां री गिणती ही कोनी।

चतराई में भी बै स्सै सूं आगै। गिरस्थी नै बां इण वास्तै बधणै नीं दी कै काल नै खरचो नीं बध जावै। इण मामलै में बै हमेसा चौकन्ना रैंवता। चावै बां रै मांय कमी समझो या खूबी, बां सूं खरचो बरदास्त नीं होंवतो।

सेठजी रै एक भाणजो हो राजू, बड़ी बहण रो बेटो। बहण-बैन्दोई दोनूं एक हादसै में चालता रैया। राजू उण बगत जाबक ही छोटो हो। काका-बाबा राखण सूं मनां कर दियो तो सेठजी रै सबदां में धिंगाणै री अलबत गळै मंडगो। जदकै सेठाणी रो तो राजू नै देखतां ही खून बधग्यो अर इंया लागै लागो कै आगै रो जीवण सुधरग्यो। बीं रो पेट तो कदै खुलणो नीं हो। खुलै भी तो कींकर ? टाबर खिंडणै रै डर सूं सेठजी तो ब्याव रै बाद आज तंई सेठाणी रै भेळै ही नीं हुया। सोच्यो भेळो हुयो नीं, कै टींगरां री फौज खड़ी हुई नीं। जिण रो मतळब है खरचो बधणो, जिको सेठां नै कतई मंजूर नीं। दूणी करणै सेठजी सरू सूं ही सेठाणी सूं अळगा ही सोंवता।

राजू जद छोटो हो, सेठाणी बींरो बोत लाड राखती। आछो खुंवावती, आछो पैरावंती। सेठजी टरड्-टरड करता रैंवता, पण सेठाणी बारै कानी ध्यान ही नीं देंवती। सेठजी राजू नै छठी सातवीं सूं आगै पढावणै रै पख में नीं हा, पण सेठाणी बीनै लगोलग आगै पढावंती रैयी। राजू भी पढ़णै में बोत होसियार हो। बैगो ही पढ़ लिख'र त्यार होयग्यो। आज बो बीकानेर में अेक बैंक में बाबू है। बठै सेठाणी रै भाई चोखाराम रै अठै इण ढंग सूं रैवै, जाणै बोही ज बींरो नानाणो है। चोखाराम भी बींनै सगै भाणजै जईं ही राखै। इयां भी बां रै दो छोरियां ही है, छोरो कोनी। फेर बहण रो कोळायत, इण कारणै, भी चोखाराम रो राजू रै माथै मन भी मोकळो हो।

बीकानेर में सेठजी रै नांव आठ मकान हा, जिका बां रै नानैजी री तरफ सूं दियोड़ा हा। पण स्सै नै सेठजी किरायै माथै चढ़ा राख्य हा। चावंता तो एक मकान राजू खातर खाली करवा सकता हा। पण, इण कारणै आ बात बां रै नीं जंची कै किरायै री रकम में घाटो पड़सी। चौखाराम रै अठै रैसी तो किरायो भी नीं देवणो पड़ै अर खाणै-पीणै रो भी सुभीतो। मतळब दोनूं कांनी सूं बचत ही बचत। दस-बीस हाथ खरचै रा टाळ'र बैंक री तिनखा छेड़णै री जरूरत नीं पड़ै।

मकानां रो किरायो वसूल करणै अर, राजू री तिनखा लावणै वास्तै सेठजी हर मईनै सेठाणी नै बीकानेर भेजता तो बा सगळां सूं मिळ जावंती अर सुख-दुख री जो भी बात होंवती कैय जांवती।

राजू बोत होणहार अर समझदार हो। सेठजी रै लालचीपणै री बीं नै पूरी जाणकारी ही। बीं नै आ भी ठा ही कै सेठजी रै अंणूतै कंजूसपणै रै कारणै ही सेठाणी री अणचीती दुरगत हुई है। इफत दस दिनां सूं बो नापासर जांवतो अर सेठाणी सूं मिळ'र पाछो आ जावतो। सेठां रा अेकर पग जरूर छूंवतो, पण फेर बां रै कांनी मुड़'र ही नीं देखतो। सेठाणी री आंख्या रो चमकतो तारो हो तो सेठजी रै वास्तै खजानै नै अखूट बनावण वाळो हो। एक रो लाडेसर तो दूजै रो कमाऊ पूत।

बिचाळै सी'क रतनगढ़ सूं अेक लूंठी आसामी हरखचन्द जी आपरी छोरी रै सगपण सारू सेठजी रै दौलत खाणै पूग्या। बांरी एक हीज बेटी। ब्यावं में बीस-लाख रिपिया तंई खरच करवा नै त्यार। मायं सूं तो ओ रिस्तो आयो देख'र सेठजी फूल्या नीं समाया, पण फेर दूर री सोच'र एक अणओपती प्हाळी घात दी। कैवण लागा- 'म्हनै सै बातां मंजूर है, पण एक बात म्हारी भी मानणी पड़सी।' हरखचन्द जी बोल्या- 'हुकम फरमाओ।'

'मुकळावो पांच-बरसां बाद करांला। इण बीच थांरी बेटी नापासर नीं आवैली।'

'सेठां आ कांई कैवो ? ब्यांव कर्यां बाद जवान बत्रा-बत्री नै अळगा कियां राख सकां ? भला ई में कांई तुक ?' - हरखचन्द जी नै बिसवास ही नीं हो र्यो हो कै सेठजी अेड़ी अनरथ री बात कै सकै।

'जणै वा। थारै नीं जंची तो म्हनैं आपरै अठै ओ सगपण नीं करणौं।' कैय नै झट दौलत खाणै सूं उठ'र मांय चल्या गया।

हरखचन्द जी मन मसोस'र रैयग्या अर सेठजी नै सिरफिरो समझ'र आपरो रस्तो लियो।

सेठाणी अै सारी बातां बांरणै री ओट में ऊभी सुणै ही। बा भी छाती में धमीड़ा लेय'र रैयगी।

अगली दफै सेठाणी जद बीकानेर गई तो हरखचन्द जी सागै सेठजी री जिकी बातां हुई बै सारी चोखाराम नै बता दी अर रोवण लागगी। चोखाराम बींनै थावस बंधायो अर बोल्यो- 'बाईसा, चिन्ता नां करो। राजू तो बियां भी अैड़ी-वैड़ी जगा ब्याव नीं करै। बीं आपरै वास्तै एक छोरी पैला सूं ही देख राखी है। आपणी ही जात री है। छोरी रो बाप, मनसुख बोत भलो आदमी है। बड़ बाजार में कपड़े री दुकान है। छोरी आछी भणी है अर एक इसकूल में मास्टरणी है। दो-च्यार दफै आपणै अठै आयोड़ी है। म्हां सै नै बा पसंद है। मनसुख भी इण रिस्तै सूं राजी है। म्हारै आगै अेकर बात भी टोरी ही। अबै म्हैं बींनै सारी बातां, जिकी बैन्दोई जी रै मन रळती री है, समझा'र बां रै कनै सगपण री बात करबां नै भेज देसूं। आगै बै आपैई देख लेसी ई चोखाराम रो चोळको।'

सेठाणी नै भाई रै चोळकै री बात जद समझ में आयी, तो बा बोत राजी हुई।

मनसुख अेक रोज सेठजी रै अठै नापासर पूगग्यो। सेठजी नै

बीं आपरी बात बतायी अर सेठजी आपरी बात बींनै। दोनूं सगपण करण नै त्यार होयग्या।

छेकड़ आखातीज रै दिन राजू अर मनसुख री बेटी रीता दोनूं बींद-बीनणी बणग्या।

परणीजण रै बाद राजू री बऊ नै एक दिन भी सासरै नीं बुलवाई। सेठजी नचीता हा। बै आहीज चांवता कै पांच-साळ तंई बीनणी नापासर नीं आवै। सेठाणी भी इण बाबत कोई जोर नीं दियो। बी नै जिका हरख-कोड करणा हा, बै भाई रै अठै कर लिया। रातीजोगै रो दस्तूर बठै ही राख्यो हो। सेठजी नै तो ई री भणक ही नीं पड़णै दी।

चोखाराम रै अठै राजू-रीता री जीवण गाड़ी भलैसर चालै ही। सेठजी आपरै मन में खुस तो सेठाणी आपरै मन में खुस।

अचाणचकै अेक रोज सेठजी कनै तार आयो कै राजू रै बेटो हुयो है, बधाई। तार देख्यो'क सेठजी आकळ-बाकळ। ओ कांई हुयो। ओजूं जद राजू री बऊ अठै आयी ही कोनी अर मुकळावो ही नीं हुयो तो अेकाअेक ओ पांचवौ कुण आग्यो। म्हारै घर में जींवा री गिणती बधगी अर म्हनै बेरो ही नीं पड़यो।

तार आयो है, ओ सुणतां ही हरख सूं उमड़ती सेठाणी कनै आय'नै बोली- अजी, कीं उळटी नां सोचो। थाळी तो जठै बाजणी ही बठै ही बाजी है। थे बेराजी क्यूं होवो ? आपणै अठै तो सरूं सूं ही थाळी बजाणी या ठीकरी फोड़णी मना है। म्हारै भाई चोखाराम रै अठै तो कोनी ?

'मतळब !'

'ओ म्हरै भाई चोखाराम रो चोळको है।'

'साची !'

'जो राम राची'

सेठजी जठै मूंढो टेर'र रैयग्या, बठै सेठाणीं रै होठां पर पाळणै रा गीत गुनगुनावण लागग्या।●

++++++ ○○○○ ++++++

एक सोवणी लड़की बस स्टैंड पर खड़ी थी। एक नोजवान कनै आ'र बोल्यो, 'चांद तो रात में निकळै आज दिन में कैयां निकल्यो।' लड़की बोली, 'उल्लू रात में बोलै आज दिन में कैयां बोल्यो।'

कुछ विशिष्ट जानकारियाँ

१. राजस्थान में तेल (क्रूड आयल) के विशाल भंडार का पता चला है और उत्पादन भी प्रारंभ हुआ है। राजस्थान में सोने और तांबे की काफी बड़ी खानों का पता चला है। आने वाले वर्षों में इनका दोहन समुचित रूप से प्रारंभ होने की आशा है।

२. आईआईएम, अहमदाबाद मैनेजमेंट कोर्स में इस वर्ष उत्तीर्ण हुए एक छात्र को १,५२,००० डालर याने रु. ७०,००,००० प्रति वर्ष के वेतन पर नियुक्त किया गया है। कलकत्ता के आई.आई.एन. कोर्स के छात्र की सीमा १००,००० डालर से अधिक नहीं हो पायी। लखनऊ के आई.आई.एम. में धनबाद से आई छात्रा का चुनाव ७०,००० डालर याने रु. ३०,००,००० प्रतिवर्ष में किया गया है।

३. बंगाल के एक सुदूर जिले में एक शिक्षिका ने जिस स्कूल में ३० वर्ष तक कार्य किया उस स्कूल में कमरों की कमी के कारण अत्यधिक कठिनाई चल रही थी। उसने अपने जीवन की बचाई रकम में से स्कूल को रु. एक लाख अनुदान देकर नये कमरे बनवाये।

मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन पर विशेष

गौरव-उत्सव

असम की पावन भूमि में
पूर्वोत्तर का 'मारवाड़ी सम्मेलन'
जन-हित में है संलग्न
घर अच्छा परिवार बनाता
अच्छा समाज, देश बनाता,
हम सबका आत्म समर्पण
रंग एक दिन लाएगा
हम सब जन-हित में हरदम हैं तैयार
समाज सेवा धर्म है अपना
समाज सेवा कर्म है अपना
धर्म, कर्म देते सम्मान
जग में हो जाता है नाम
हम सब जनहित में हरदम हैं तैयार
स्वागत है बंधुवर का,
समाज सेवी निज रत्नों का
दुर्गा-भवानी सम् बहनों से
गौरवान्वित 'गौरव-उत्सव' होगा
हम सब जन हित में हरदम हैं तैयार
'गौरव-उत्सव' उद्घाटित हो-
साहित्यकार कनकसेन डेका से
मुख्य अतिथि प्रफुल्ल महंत और
विशिष्ट अतिथि पी.जी. अग्रवाला से
हम सब जन हित में हरदम हैं तैयार
शांति सद्भावना पद-यात्रा होगी
सांस्कृतिक कार्यक्रम, संस्कृति प्रदर्शन
मुख्यमंत्री तरुण गोगोई से
उद्घाटित खुला अधिवेशन होगा
हम सब जन-हित में हरदम हैं तैयार
असम की पावन भूमि में
'गौरव-उत्सव' गौरवान्वित है
अखिल भारतवर्ष दर्शन
मंगल पावन पुनीत अवसर
सुंदर मार्गदर्शन मिलेगा,
समाज ज्योतिर्मय बनेगा
हम सब जनहित में हरदम हैं तैयार।

- प्रेमलता खंडेलवाल

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

युग पथ चरण

जोरहाट में १२वां प्रांतीय अधिवेशन सम्पन्न ता: २५-२६ फरवरी २००५

"मारवाड़ी बहिरागत नहीं" - कनक सेन डेका

गौहाटी में बालिका छात्रावास के लिए ज़मीन व रु. १७ लाख देने की एवं रु. १ करोड़ का सम्मेलन कोष बनाने की घोषणा

"असम में शायद ही कोई व्यक्ति है जो असमिया मूल का है। सभी बाहर से आए हैं। अगर बाहर से आए लोग असमिया बन सकते हैं तो मारवाड़ी क्यों नहीं? इसलिए मारवाड़ी भी 'बहिरागत' नहीं है।" ये बातें असम साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री कनकसेन डेका ने मारवाड़ी ठाकुरबाड़ी में चल रहे पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के १२वें अधिवेशन में आज यहां मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेते हुए कहा।

श्री डेका ने कहा कि शंकरदेव, माधवदेव, लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा, आनन्द राम बरुवा, गोपीनाथ बरदलै, मीरी, बाग्हा आहोम समेत अधिकतर लोग बाहर से यहां आए और असमिया बन गए और असमिया कहलाए। इसलिए मारवाड़ियों को 'बहिरागत' कहना उनके साथ अन्याय करना है। असम के मारवाड़ियों ने असम को अपनी मातृभूमि माना है और असम के सर्वांगीण विकास व वृहत्तर असमिया समाज के गठन की प्रक्रिया में कार्यरत हैं। राजस्थान की परम्परा तथा संस्कृति काफी पुरानी और गौरवशाली है। उन्होंने घोषणा की कि वे राजस्थानी नृत्य को असम साहित्य सभा में शामिल करेंगे। उन्होंने कहा कि राजनैतिज्ञों ने असम का जितना नुकसान किया है उतना किसी ने नहीं किया। मारवाड़ी समुदाय के लोगों ने असम की आर्थिक स्थिति संवारने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

श्री डेका ने इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका 'अवलोकन' का विमोचन किया जिसका कि सम्पादन श्री शरद बजाज ने किया। श्री डेका द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया।

इसके पूर्व पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रादेशिक अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने झण्डोत्तोलन किया, तत्पश्चात् पर्यावरणविद् एवं शाखाध्यक्ष श्री विश्वम्भर दयाल अग्रवाल ने अधिवेशन पंजीकरण व पूछताछ कार्यालय का उद्घाटन किया, जहां सम्मेलनाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने सर्वप्रथम अपना नाम पंजीकृत करवाया। स्वागताध्यक्ष श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल ने स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर तथा वयोवृद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री मुरलीधर खेतान ने प्रतिनिधि शिविर का उद्घाटन किया।

प्रांतीय महामंत्री श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल ने प्रांतीय सम्मेलन के तीन साल के कार्यकाल की गतिविधियों का लेखा-जोखा (प्रतिवेदन) पाठ किया तथा सम्मेलन की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

सम्मेलनाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने विदाई अभिभाषण में समाज की समस्याओं को इंगित करते हुए कहा कि हमारे समाज में अनेकों समस्याएं हैं। समयानुसार उनका स्वरूप अवश्य बदला है जिसके लिए हमें प्रख्यात समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण के 'समग्र क्रान्ति' के स्थान पर 'समग्र सामाजिक क्रांति' की शुरूआत करनी होगी और सामाजिक क्रांति का बिगुल बजाते हुए पूर्ण ईमानदारी और निष्ठा के साथ अपना सर्वस्व देना होगा। अपने समाज में दिनोंदिन बढ़ती जा रही 'भ्रूण हत्या' पर चिंता व्यक्त करते हुए इसकी रोकथाम का आह्वान किया। मातृशक्ति के उत्थान पर बोलते हुए श्री अग्रवाल ने कहा कि हमें नारी शक्ति को पूरा सम्मान प्रदान करते हुए उनके स्वरोजगार पर पूरा ध्यान देना होगा। उन्होंने गौरव उत्सव पर बोलते हुए सम्मेलनाध्यक्ष ने समाज तथा युवा वर्ग से पुरजोर शब्दों में आह्वान किया कि हमें रोजगार के नये-नये अवसर तलाशने चाहिए। एक उदाहरण देते हुए आपने कहा कि किसी जमाने में देश के सर्वोच्च धनाढ्य सम्पन्न व्यक्तियों में प्रथम १० नामों में से ५-७ मारवाड़ी समाज के लोगों के होते थे और आज स्थिति यह है कि २० नामों में से एकाध नाम ही इस श्रेणी में आता है। हमें इस दिशा में पूरजोर प्रयास करना चाहिए ताकि अपने खोये हुए आत्म सम्मान को वापस ला सके। सामाजिक एकता, दिखावा, आडम्बर और

मंच पर विराजमान प्रफुल्ल कुमार महन्त, न्यायाधीश पी.जी. अग्रवाल व अन्य नेतागण।

फिजुलखर्ची पर भी अंकुश लगाने का आपने आह्वान किया, साथ ही इस बात पर भी बल दिया कि हमें युवा वर्ग को ध्यान में रखते हुए योजनाएं बनानी चाहिए। श्री अग्रवाल ने मारवाड़ी समाज की समस्त घटक संस्थाओं यथा अग्रवाल, जैन, ओसवाल, माहेश्वरी, ब्राह्मण, जाट, प्रजापति आदि छोटी-बड़ी संस्थाओं से मारवाड़ी सम्मेलन के एक छतरी के नीचे आने का आह्वान करते हुए उन्हें आश्वस्त किया कि उनके किसी मूल स्वरूप के साथ छेड़-छाड़ नहीं की जाएगी। अपने समाज के प्रत्येक स्त्री-पुरुष और युवा वर्ग से आह्वान किया कि वे समाज के आत्म सम्मान और आत्म गौरव को अक्षुण्ण बनाए रखने की दिशा में प्रयासरत हो। अंत में अपने समस्त सहयोगी और समाज बंधुओं तथा कार्यकर्ताओं के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया।

श्री अग्रवाल ने अपने ओजपूर्ण भाषण में कहा कि मारवाड़ी समाज में लक्ष्मी पुत्र और सरस्वती पुत्र पहले से विद्यमान हैं। समाज को अब जरूरत दुर्गा पुत्रों भी की है। मारवाड़ी समाज आर्थिक, सामाजिक रूप से शक्ति सम्पन्न है। अगर कोई कमी है तो राजनीतिक क्षमता की। इसलिए समाज को अब राजनीतिक क्षमता प्राप्त करने के लिए राजनीति में पूरी तरह सक्रिय हो जाना चाहिए। २० निकायों में ४० चेयरमैन हैं, लेकिन किसी पर भ्रष्टाचार का दाग नहीं लगा है। इसलिए मारवाड़ी समाज ही स्वच्छ और भ्रष्टाचार मुक्त शासन दे सकता है। असम में जन्में, पलने-बढ़ने वाले मारवाड़ी समाज के लोगों को दूसरे दर्जे का नागरिक समझकर अपमानित करना खेद की बात है। इसलिए अब समाज को दुर्गा पुत्रों की आवश्यकता है।

श्री किशोर कुमार जैन द्वारा सम्पादित ''सम्मेलन समाचार विशेषांक'' का विमोचन करने के बाद सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि मारवाड़ी समाज में संगठन का अभाव है। माहेश्वरी, अग्रवाल, ओसवाल, जैन आदि सभी जातियों में अब रोटी-बेटी का रिश्ता बनना चाहिए। हमें मारवाड़ी कहकर जो हमें हीन दिखाना चाहता है वह खुद ही हीन है। हमारे पास पैसा, ताकत, बुद्धि सब है। इसलिए हमें कोई आंखें नहीं दिखा सकता। मारवाड़ियों ने वह कर दिखाया है जो दूसरा कोई नहीं कर सका। श्री तुलस्यान ने प्रस्ताव दिया कि मारवाड़ी सम्मेलन को असमिया भाषा के विशिष्ट साहित्यकारों, कवियों, पत्रकारों को सम्मानित करना चाहिए जैसा कि बंगाल में किया जाता है। पर इसके लिए खुद को बदलना होगा।

सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने अपने ओजस्वी भाषण में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रशंसा करते हुए अधिवेशन को अद्वितीय बताया। उन्होंने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन देश के कोने-कोने में बसे ९ करोड़ मारवाड़ियों की एकमात्र संस्था ७० साल से समाज-सुधार एवं उत्थान की दिशा में कार्य कर रही है। इसके स्थापना काल में पर्दा-प्रथा एवं महिलाओं की शिक्षा-दीक्षा का यह आलम था कि उन्हें घर से निकलने में ही मनाही थी जबकि इस बार हैदराबाद अधिवेशन में ५०० महिलायें मंच पर बोलने के लिए उत्सुक थीं और उन्हें कम बोलने के लिए कहा जा रहा था। एक तब का समय था जब महिलाओं को कुछ कहने के लिए प्रेरित किया जाता था और एक अब का समय है जब महिलाओं को कम बोलने का अनुरोध किया जाता है इससे महिलाओं की प्रगति का एक दृष्टांत देखने को मिलता है।

वरिष्ठ राजनीतिज्ञ दुलाल बरुवा समेत कई लोगों ने इस समारोह को संबोधित किया।

सम्मेलन में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के नए अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल ने कहा कि शादी-ब्याह जैसे मौकों पर फिजूलखर्ची करना मूर्खता है। हमारे पुरखों ने हमेशा अपनी आय का एक अंश जनहितार्थ लगाया, पर आज स्थिति कुछ बदली हुई सी लगती है, हमारा रुपया सार्थक कार्यों की जगह झूठे दिखावे में लगने लगे हैं, अगर हम इस स्थिति को परिवर्तित कर सकें तो भारत के मानचित्र पर हमारी स्थिति सर्वोपरि होगी। उन्होंने समाज के लोगों से अपने बैर-भाव भुला कर राजनीति में भाग लेने का अनुरोध करते हुए कहा, ''बूंद-बूंद से सागर बनता है। आइए हम बूंद बनने का प्रयास करें।'' उन्होंने समाज की महिलाओं और युवाओं से समाज निर्माण में तन-मन-धन से जुट जाने का आह्वान करते हुए पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण न करने की सलाह तथा अपनी भाषा, संस्कृति और कला के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने का अनुरोध किया। मातृशक्ति के उत्थान की ओर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि शिक्षा के साथ-साथ अपनी भाषा और संस्कृति व परम्पराओं को जीवित रखने में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी है। यदि नई पीढ़ी की युवतियां एक लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़े तो कोई कारण नहीं कि उनमें से कोई कल्पना चावला और किरण बेदी या सानिया मिर्जा की तरह ऊंचाइयों के शिखर को छूने से पीछे रह जाए।

श्री किशन बजाज ने सभी कार्यक्रम को संचालित किया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री सर्वश्री भानीराम सुरेका, प्रदेश के कार्यवाहक अध्यक्ष श्याम सुन्दर हरलालका, मोहनलाल जालान, प्रह्लाद राय तोदी, श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल, प्रभुदयाल, पद्मा मोर, प्रदीप खदरिया, नवलकिशोर मोर, भजनलाल नाहटा, मांगीलाल चौधरी आदि आमंत्रित अतिथि के रूप में मंच पर विराजमान थे।

अविवेशन में कुल ४८१ प्रतिनिधियों ने अंश ग्रहण किया जिनमें जोरहाट के १६० प्रतिनिधियों, नगांव के ५६, गुवाहाटी शाखा से ५०, मौरान शाखा के २८ प्रतिनिधियों ने अधिवेशन में शिरकत की, वो भी राजस्थानी साफा-चुनड़ी पहनकर। नवगठित बरहोला ग्रामीण शाखा से १४ प्रतिनिधियों ने अधिवेशन में उपस्थिति दर्ज करायी। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं वयोवृद्ध समाजसेवी ९४ वर्षीय श्री भगवानदास खेमका ने सबसे लम्बी आयु के प्रतिनिधि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

युवा व महिला सत्र के मुख्य अतिथि तथा असम के पूर्व मुख्यमंत्री प्रफुल्ल कुमार महंत ने कहा कि मारवाड़ी समाज

ने असम के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसे भुला पाना किसी के लिए भी सम्भव नहीं है। मारवाड़ी असमिया समाज के अभिन्न अंग हैं जिन्हें अलग कर वृहत्तर असमिया समाज की कल्पना नहीं की जा सकती।

समारोह के विशिष्ट अतिथि तथा गौहाटी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री पी.जी. अग्रवाल ने समाज के योगदानों पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं एवं युवाओं को सक्रिय भागीदारी के लिए आह्वान किया। युवा व महिला सत्र में श्रीमती ऊषा बजाज, प्रेमा सारडा, दंत चिकित्सक डॉ. सुनिता अग्रवाल, श्री हरि गोयनका ने भी अपने विचार रखे। सत्राधिकार सर्वश्री पीताम्बर देव गोस्वामी, दीनानाथ बरूवा, कन्हैयालाल बाकलीवाल, ओमप्रकाश केजरीवाल, मोहनलाल जालान, ओंकारमल अग्रवाल, ओमप्रकाश खण्डेलवाल, श्यामसुन्दर हरलालका, नवलकिशोर मोर तथा श्रीमती शान्ता अग्रवाल आदि मंच पर उपस्थित थे।

इस सत्र का संचालन युवा मंच के प्रांतीय अध्यक्ष श्री नवलकिशोर मोर तथा श्रीमती शान्ता अग्रवाल ने किया।

माननीय पूर्व मुख्यमंत्री श्री महंत ने कवयित्री श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल द्वारा रचित ''दिग तोर ही पारोत'' के दूसरे भाग का विमोचन किया।

संध्याकालीन सत्र में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

इसके पूर्व २५ फरवरी को प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति एवं प्रादेशिक सभा की बैठकें की गई। इस सत्र की अन्तिम बैठक सम्मेलनाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें महामंत्री श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल एवं कोषाध्यक्ष श्री बजरंगलाल नाहटा द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन एवं आय-व्यय का ब्यौरा को स्वीकृति प्रदान की गई एवं आवश्यक विचार-विमर्श के पश्चात् अन्याय विषयों के अलावा संविधान संशोधन के कई सुझावों और प्रस्तावों को पारित कर विषय निर्वाचनी में भेजा गया।

गौरव शोभा यात्रा में विभिन्न शाखाओं के प्रतिनिधिगण।

विषय निर्वाचनी सभा में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विषयों के अलावा सम्मेलन संविधान संशोधन के कई प्रस्तावों को पारित किया गया।

अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने जोरहाट के श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल को सर्वसम्मति से नये अध्यक्ष के रूप में चयन की घोषणा की।

२७ फरवरी को प्रातः एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक २ किलोमीटर लम्बी 'सद्भावना गौरव यात्रा' जोरहाट शहर के मुख्य मार्गों से निकाली गई, जिसमें करीबन ५०० महिलाएं एक ही वेशभूषा एवं पोशाकें पहने हुई थीं।

अधिवेशन के खुले सत्र में असम के मुख्यमंत्री तरूण कुमार गोगोई ने अपने वक्तव्य में कहा कि मारवाड़ी समाज के हर वर्ग के लोगों ने सामाजिक कार्य, सेवाभावी कार्य, शिक्षा, कला, साहित्य, व्यापार एवं उद्योग आदि सभी क्षेत्रों में काफी उन्नति की है, जो कि सराहनीय है। मेरी सरकार मारवाड़ियों को पूर्ण राजनीतिक सुरक्षा प्रदान करेगी। जिस वर्ग के लोगों में इतनी क्षमताएं मौजूद हों उन्हें राजनीति में अवश्य होना चाहिए। श्री गोगोई ने गुवाहाटी में बालिका छात्रावास के लिए सरकार की ओर से जमीन आवंटित करने का आश्वासन दिया।

श्री बाकलीवाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में गुवाहाटी में एक बालिका छात्रावास हेतु १० लाख रुपये देने की घोषणा की तथा सम्मेलन के स्थायी कोष के लिए एक करोड़ का ध्रुवकोष बनाने की घोषणा की, जिसमें अपनी ओर से १० लाख रुपये देने की घोषणा की। इस अवसर पर स्थानीय उद्योगपति श्री ओमप्रकाश गट्टानी ने ५ लाख रुपये तथा डिब्रुगढ़ के श्री बी.एन. गाड़ोदिया एवं जोरहाट के श्री किस्तुरचंद पोद्दार ने १-१ लाख रुपये देने की घोषणा की।

इस सत्र को सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जालान, पूर्व महामंत्री श्री ओमप्रकाश केजरीवाल ने भी सम्बोधित किया। श्री जालान ने सम्मेलन के पदाधिकारियों को इस कार्यकाल में तुलनात्मक दृष्टि से अच्छा कार्य करने के लिए बधाई दी।

इस सत्र में सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक एवं संवैधानिक कई प्रस्तावों को पारित किया गया एवं समाज के विभिन्न शाखाओं तथा समाज बंधुओं को विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान करने के लिए प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न तथा फुलाम गमछा प्रदान कर सम्मानित व सम्बर्धित किया गया।

नगांव, राहा, लखीमपुर, मोरान, सिलचर, जोरहाट आदि शाखाओं को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। वहीं सर्वश्री मांगीलाल चौधरी, बजरंगलाल नाहटा, दीनदयाल सिवोटिया, बाबूलाल गगड़, श्रीमती रत्नप्रभा सेठी, डॉ. सुनीता अग्रवाल आदि को व्यक्तिगत योगदान के रूप में सम्मानित किया गया। समाज के विभिन्न सामाजिक, कला-संस्कृति, खेलकूद, पर्वतारोहण, सामाजिक सेवा आदि अनेकों क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों और युवाओं को सम्मोहित कर प्रशस्ति पत्र तथा प्रतीक चिह्न प्रदान किया गया।

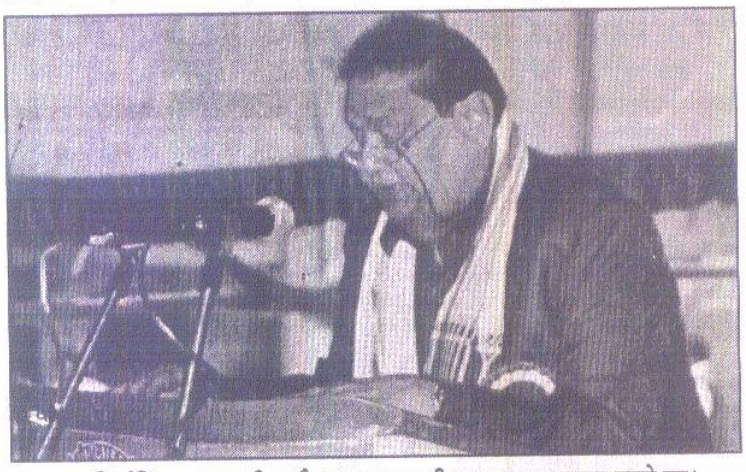

नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल अपना वक्तव्य रखते हुए।

इस अवसर पर कमलाबाड़ी सत्र के सत्राधिकार श्री पीताम्बर देव गोस्वामी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों को सम्मान प्रदान किया गया।

अधिवेशन आयोजन में उल्लेखनीय सहयोग और योगदान के लिए विभिन्न उपसमिति संयोजक / सह संयोजक और सदस्यों को सम्मानित किया गया। सम्मेलन मुख्यालय के कार्यालय सचिव श्री ओंकार पारीख को भी प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

आगत समस्त प्रतिनिधियों और अतिथियों ने जोरहाटवासियों द्वारा की गई मेजबानी की मुक्त कंठों से सराहना की।

अधिवेशन को सफल बनाने में स्थानीय समाज बंधुओं एवं सामाजिक संस्थाओं का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

नवनिर्वाचित सभापति श्री कन्हैयालाल बाकलीवाल ने अपनी कार्यकारिणी के कार्याध्यक्ष सर्वश्री विजय कुमार मंगलुनिया, उपाध्यक्ष - प्रदीप खदरिया, महामंत्री - बाबूलाल गगड़ व कोषाध्यक्ष शरद बजाज के साथ पदभार ग्रहण किया। पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल जालान ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष को पद की शपथ दिलाई। निवर्त्तमान महामंत्री श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल तथा नवनिर्वाचित महामंत्री श्री बाबूलाल गगड़ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सम्मेलनाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न ''गौरव उत्सव २००५'' की थीम भावना से ओतप्रोत यह अधिवेशन अपनी कई विशेषताओं के लिए स्मरणीय एवं उल्लेखनीय रहेगा।

१९३५ में सम्मेलन की स्थापना के ७० सालों में यह पहला अवसर है जबकि जोरहाट शहर को अधिवेशन की मेजबानी करने का सौभाग्य मिला। अधिवेशन स्थल- श्री मारवाड़ी ठाकुरबाड़ी प्रांगण भी सम्पूर्ण भारत के मारवाड़ी समाज में सम्भवत: एक अकेला उदाहरण प्रस्तुत किए हुए हैं जहां सनातन, दिगम्बर जैन और श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बियों के उपासना गृहों के अलावा सभी के अपने-अपने विवाह भवन भी है।

पूर्वोत्तर सम्मेलन के इतिहास में पहला अवसर था जबकि एक ''शोभायात्रा' जो कि ''गौरव यात्रा'' के रूप में निकाली गई, जिसमें समस्त शाखा प्रतिनिधियों और स्थानीय स्तर पर मारवाड़ी समाज की महिला-पुरुषों और स्कूली छात्रों ने विभिन्न वेशभूषा और परिधान से सुसज्जित होकर हिस्सा लिया। जहां एक ओर पूर्वोत्तर के ७ राज्यों की प्रतीक सात बहनें वहीं दूसरी ओर राजस्थानी परिधान लाल-पीली चुनड़ी, लहरेदार लहंगा-चुनड़ी, कुरता-पजामा और साफा धारण किए हुए पुरुष वर्ग तो कहीं पर असम का बिहू नृत्य तो कहीं पर होली के चंग की थाप देते हुए राजस्थानी युवाओं की टोली अपने एक विशिष्ट छवि लिए शहर के चारों ओर परिक्रमा कर अधिवेशन स्थल को वापस लौटी। अधिवेशन में शिरकत करने जहां एक ओर पूर्वोत्तर के प्रमुख पदाधिकारीगण उपस्थित थे ही वहीं दूसरी ओर सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका विशेष रूप से उपस्थित हुए।

अन्तत: साहित्यकार, न्यायविद्, शिक्षाविद्, कलाकार, पत्रकार, समाजसेवी, पर्यावरणविद्, पर्वतारोही, लेखक, उद्यमी, कवि तथा राजनीतिज्ञों की उपस्थिति से गौरवान्वित जोरहाट में आयोजित पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का द्वादस अधिवेशन नये कीर्तिमान स्थापित करते हुए अपनी अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पटना सिटी : बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन २४वां प्रादेशिक अधिवेशन सम्पन्न

पूर्व राज्यपाल जगन्नाथ पहाड़िया द्वारा मारवाड़ी समाज की सेवा भावना की सराहना

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का २४वाँ अधिवेशन सम्राट अशोक की नगरी एवं गुरुगोविन्द सिंह की जन्मस्थली नगर सनातन धर्म भवन दिनांक ६.३.०५ को आयोजित किया गया। पटना सिटी शाखा के आतिथ्य तथा श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला की अध्यक्षता में अधिवेशन के विविध कार्यक्रम काफी उत्साह, उमंग एवं लगन के साथ सम्पन्न किये गये। अधिवेशन में राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पदाधिकारियों के अतिरिक्त शाखा से काफी संख्या में शाखा के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला द्वारा अधिवेशन स्थल पर प्रात: ९.३० बजे झंडोत्तोलन किया गया।

तत्पश्चात उद्घाटनकर्त्ता, मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, अध्यक्ष, नवनिर्वाचित अध्यक्ष, भूतपूर्व अध्यक्ष, महामंत्री, स्वागताध्यक्ष, स्वागत मंत्री, अधिवेशन संयोजक, शाखाध्यक्ष को मंच पर आसन ग्रहण कराया गया तथा चुनड़ी पगड़ी एवं माला पहनाकर स्वागत किया गया। मंच का संचालन डा. सुशील पोद्दार एवं श्री मनोज झुनझुनवाला कर रहे थे।

अधिवेशन का उद्घाटन : सर्व प्रथम स्वागत गान किया गया। बिहार के भूतपूर्व राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने दीप प्रज्वलन कर अधिवेशन का विधिवत उद्घाटन किया।

स्वागताध्यक्ष का भाषण : श्री गोविन्द प्रसाद भरतिया ने स्वागत भाषण में कहा कि भगवान बुद्ध एवं महान कूटनीतिज्ञ चाणक्य की कर्मभूमि, खालसा पंथ के संस्थापक सिखों के दसवें गुरु-गुरु गोविन्द सिंह की जन्मभूम, भागरथी के पावन पट पर बसी प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगरी पटना सिटी में आयोजित बिहार प्रादेशिक सम्मेलन के २४वें प्रादेशिक अधिवेशन में आपका आतिथ्य पाकर हम धन्य हुए।

पटना सिटी के चहुंमुखी विकास में राजस्थानी समाज की अहम् भूमिका रही है। उद्योग-व्यवसाय के विकास में तो समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा ही, साथ ही अनेक शिक्षण संस्थानों, धर्मशालाओं, विवाह भवनों, गौशालाओं पुस्तकालयों मंदिरों इत्यादि का निर्माण एवं संचालन कर हमने अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया है तथा समाज एवं राष्ट्रहित में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। यह हमारे समाज के लिए गौरव की बात है।

लेकिन अब वक्त ने करवट ली है। सारे विश्व में परिवर्तन का चक्र चल पड़ा है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा था कि परिवर्तन ही संसार का नियम है। समय को पहचानते हुए हमने भी परिवर्तन की राह पकड़ ली है। लक्ष्मीपूजा तक ही सीमित रहने वाले मारवाड़ी समाज में आज शिक्षा के महत्व को समझा जाने लगा है। लड़के ही नहीं, लड़कियां भी आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत हैं।

हमारे सम्मेलन ने ६७ वर्ष की आयु पार कर ली है। उम्र के इस पड़ाव में सम्मेलन को गहन चिंतन करना होगा कि हमने लक्ष्य प्राप्ति हेतु इन वर्षों का सार्थक उपयोग किया अथवा नहीं।

पटना सिटी की भूमि पर बिहार प्रदेश का २४वां अधिवेशन यादगार बने इसका पूरा ख्याल पटनासिटी शाखा ने रखा है। फिर भी किसी प्रकार की चूक को क्षमा कर अधिवेशन के मूल्य उद्देश्यों की पूर्ति में अपना महत्वपूर्ण सहयोग दान करें। अधिवेशन रूपी समुद्र मंथन से अमृत की प्राप्ति हो, जिससे समूचे समाज का कल्याण हो, यही मेरी कामना है।

उद्घाटनकर्त्ता का भाषण : अपने उद्घाटन भाषण में श्री पहाड़िया जी ने बिहार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्यपाल के रूप में यहां बिताए हुए समय आज भी स्मरणीय है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मारवाड़ी समाज से मतलब केवल राजस्थान से आये हुए व्यक्ति से नहीं है बल्कि इसका क्षेत्र और व्यापक है। इसमें हरियाणा एवं मालवा के लोग भी आते हैं। और वहां से आये हुए लोग बिना जाति एवं धर्म के संकुचित सीमाओं में बंधे-मारवाड़ी है। इन सबको जोड़ने से ही मारवाड़ी समाज का दायरा हो सकता है इसकी आवश्यकता है।

श्री पहाड़िया ने कहा कि मारवाड़ी समाज, उदारता, सेवा और दानवीरता का प्रतीक है। इस समाज की सूझबूझ, कार्यक्षमता और जोखिम लेने का साहस दूसरों के लिए अनुकरणीय है। उपजाति की भेदभाव की मानसिकता त्याग कर बड़ी शक्ति बनने का आह्वान किया।

राजस्थानी गैर बिरादरी के लोगों को भी मारवाड़ी अपनी जमात में शामिल कर 'जियो और जीने दो' का नारा देते हुए जागृति लाये और उदारता, दानवीरता और साहस के परिचायक बने तभी मारवाड़ी समाज का उत्थान व विकास संभव है। आपने महावीर, बुद्ध और चाणक्य के इस नगर में उनके सिद्धांतों का अनुसरण कर आगे बढ़ने की सलाह दी।

अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी तुलस्यान।

उन्होंने यह भी कहा कि अभी मैं राजस्थान में रहता हूं किन्तु मारवाड़ी समाज की समस्याओं की ओर मेरा ध्यान आकर्षित कराया जायेगा तो मैं उसके समाधान के लिए हमेशा प्रयत्न करूंगा। आपने यह भी कहा कि बिहार के वर्तमान राज्यपाल श्री बूटा सिंह जी का चुनाव क्षेत्र राजस्थान रहा है तथा वे वहां से जीत कर लोकसभा में जाते रहे हैं। माननीय राज्यपाल जी यहां आने का इरादा रखते थे किंतु राजकीय काम काज में व्यस्त रहने के कारण नहीं आ सकें। उन्होंने इच्छा जताई है कि जल्द से जल्द मारवाड़ी समाज के भाई बहनों के बीच आयेंगे और हमारी बातें सुनेंगे।

मुख्य अतिथि का भाषण : मुख्य अतिथि पद से अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि पूरे भारतवर्ष में जहां कहीं भी मारवाड़ी सम्मेलन कार्यशील है, उसमें बिहार का स्थान सर्वोपरि है। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन न केवल एक संगठित संस्था है, बल्कि यहां के समाजसेवी तन-मन-धन से सम्मेलन के कार्य कलापों को आगे बढ़ाने में तत्पर रहते हैं।

श्री तुलस्यान जी ने इस बात पर पूरा जोर दिया कि हमारा समाज शौर्य एवं उदारता दोनों में अग्रणी रहा है किन्तु यह दुर्भाग्य है कि आज हम कमजोर समाज के रूप में जाने जाते हैं। हमें अपने पुराने मूल्यों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। महाराणा प्रताप आदि की वीरता सर्वविदित है, उससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए और हमें समाज को न केवल साहसी बनाना है बल्कि हमारी एक शक्तिशाली छवि दुनिया के सामने रखना है। समाज के लोग जहां भी देश एवं विदेशों में गए वहां सेवाभाव से अपना व्यापार करते रहे हैं। सेवाभाव को व्यापक बनाते हुए मानवीय मूल्यों पर आधारित विभिन्न संस्थाओं का यथा विद्यालय, अस्पताल, धर्मशालाओं का निर्माण कर वहां के स्थानीय लोगों की सेवा करते रहे हैं।

आपने मारवाड़ी समाज की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज में तेजी से पनप रही कुरीतियों का त्याग कर सादा जीवन और उच्च विचार के परम्पराओं के पालन के लिए नई पीढ़ी को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

उद्घाटनकर्त्ता पूर्व राज्यपाल श्री पहाड़ियाजी ने सम्मेलन को वृहद मारवाड़ी समाज से जोड़ने की बात करते हुए संकुचित विचार एवं क्षेत्र के परित्याग की अपील की। उन्होंने उम्मीद जतायी कि उनके वक्तव्य को एक सकारात्मक आलोचना के रूप में लिया जायेगा क्योंकि वे सम्मेलन को सम्पूर्ण राजस्थानी समाज के प्रतिनिधि के रूप में जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि वे सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा के विचार इस पर सुनना चाहेंगे।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का भाषण : सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि सम्मेलन श्री पहाड़िया के स्पष्ट विचारों एवं सुझावों के लिए कृतज्ञ हैं। अपनी कमियों, बुराइयों एवं खामियों को जानकर ही एवं उनकी खुलकर चर्चा करके ही समाज में सुधार संभव है। सम्मेलन सदैव स्व-आलोचना एवं आत्म चिंतन का हामी रहा है। सम्मेलन सम्पूर्ण राजस्थानी समाज का प्रतिनिधित्व करता है इसमें किसी भी तरह की संकीर्ण या संकुचित भावना का कोई स्थान नहीं है। श्री शर्मा ने कहा कि पूरा राजस्थान समाज एक फुलवारी की तरह है जिसमें सभी तरह के फूल खिल रहे हैं। सम्मेलन प्रवासी राजस्थानी समाज के बगीचे के रूप में सभी का प्रतिनिधित्व करता है।

निवर्तमान अध्यक्ष का सम्बोधन : बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष श्री रमेश कुमार केजड़ीवाल ने कहा कि विगत दो वर्ष पूर्व आपने जिस विश्वास के साथ मुझ पर अध्यक्ष पद की महती जिम्मेवारी सौंपी मुझे संतुष्टि है कि आपके विश्वास को सार्थक बनाए रखने के लिए मैंने अपनी सीमित योग्यता के अनुरूप पूर्ण ममत्व के साथ सम्मेलन में योगदान किया। मैंने अध्यक्ष पद का भार ग्रहण करने के पूर्व जो भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की थी, उसे मूर्तरूप देने का मनसा-वाचा-कर्मणा से प्रयास किया। मुझे संतुष्टि है कि मेरी कार्यकारिणी के प्रयासों के परिणाम स्वरूप क्या किया यह उल्लेखनीय नहीं, अपितु उल्लेखनीय यह है कि सम्मेलन का संगठन सुदृढ़ हुआ, इसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई एवं भारत के सुदूर प्रदेशों में भी प्रवासी बिहार मारवाड़ी समाज की स्थापना हुई जिसे बिहार प्रादेशिक

मारवाड़ी सम्मेलन से सम्बद्धता प्रदान कर एक इतिहास रचा गया।

सम्मेलन की सदस्यता : सत्र २००३-०४ के दौरान ११९ शाखाओं का सक्रिय रूप से नव निर्वाचित किया गया एवं इस अवधि में १३३ वंशानुगत सदस्य १३० आजीवन सदस्य एवं लगभग ३००० साधारण सदस्य बनाए गए।

संगठनात्मक कार्य : वर्तमान सत्र में संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओं एवं पदाधिकारियों के सहयोग से संगठन समिति का गठन किया गया जिसका संयोजक श्री जयदेव नेमानी को मनोनीत किया गया एवं उनके संयोजकत्व में सर्वश्री रामजी भारती, उपाध्यक्ष, किशोरीलाल अग्रवाल, संयुक्त मंत्री, सीताराम बाजोरिया, प्र. उपाध्यक्ष, वैद्यनाथ बंका, बद्रीप्रसाद अग्रवाल, हनुमान प्रसाद पोद्दार, रीछपाल अग्रवाल आदि समर्पित कार्यकर्त्ताओं ने टीम भावना से मेरे मार्ग निर्देश पर ११९ शाखाओं का दौरा किया जिसके फलस्वरूप संगठन सुदृढ़ हुआ। शाखाओं में पदाधिकारियों का पूर्ण गठन हुआ। नये सदस्य बनाए गए और सम्मेलन के प्रति समाज के लोगों में जागरूकता बढ़ी। कोशी, तिरहुत, पूर्णिया, दरभंगा, भागलपुर, सारण, पटना एवं मगध प्रमंडल का दौरा सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन की आर्थिक स्थिति : सम्मेलन की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने हेतु प्रयास प्रारंभ किया गया जिसके फलस्वरूप सम्मेलन के इतिहास में पहली बार भाग्यशाली दानपत्र योजना सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस योजना के फलस्वरूप सम्मेलन की शाखाओं में सक्रियता आयी एवं सम्मेलन के कार्य कलापों में मजबूती आयी जिसके फलस्वरूप संगठनात्मक कार्यों में रूचि जागृत हुई एवं हमारी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ हुई। मैं आपको अवगत कराना चाहता हूं कि इस सत्र में स्थायी कोष में हमने ५.५० लाख हस्तांतरित किया है। साथ ही सदस्यता अभियान द्वारा अधिक से अधिक सदस्य बनाए गए इससे भी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई।

विगत सत्र के दो वर्षों में मैंने अपनी सीमित योग्यता एवं अनुभवों के आधार पर अध्यक्ष पद की महती जिम्मेवारी का निर्वाह करने में कहां तक सफल रहा इसका आकलन तो आप करेंगे। लेकिन मैं अपनी कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों विशेषकर महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार एवं कोषाध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जगनामी एवं सदस्यों एवं मार्ग-दर्शन के कारण ही मैं अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह कर सका। सम्मेलन के सदस्यों को परिचय पत्र एवं पहचान पत्र हेतु बेंच का अभाव मुझे काफी खटकता रहता था। इस सत्र में इन कमियों को दूर किया गया और सभी सदस्यों को परिचय- पत्र एवं बैच वितरित किया जा रहा है। मैं सम्मेलन के प्रति सदैव समर्पित रहा हूं और रहूंगा और नवनिर्वाचित अध्यक्ष महोदय को हर सहयोग देने हेतु सदैव तत्पर रहूंगा। कार्यालय के संचालन में हमारे सहयोगी श्री मोहनलाल श्रीवास्तव, श्रीलाल बाबू, श्री अविनाश एवं अन्य कर्मचारियों को भी धन्यवाद देता हूं जिन्होंने निरंतर तत्परतापूर्वक अपनी जिम्मेवारी का निर्वाह किया।

निर्वाचित अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला पदभार ग्रहण करते हुए।

निवर्त्तमान अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल ने अपने कार्यकाल में किए गए दौरा, बनाये गए सदस्य एवं अन्य कार्यकलापों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। अपने सहयोग के लिए सभी पदाधिकारियों का आभार व्यक्त करते हुए नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं उनके द्वारा मनोनीत होने वाली कार्यकारिणी के प्रति शुभकामना दी तथा आशा व्यक्त की कि नये अध्यक्ष के नेतृत्व में संगठन और अधिक सुदृढ़ होगा तथा समाज को नई दिशा मिलेगी। तत्पश्चात नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला को अध्यक्ष पद का पदभार ग्रहण करवाया।

निवर्त्तमान महामंत्री का उद्‌बोधन : निवर्तमान महामंत्री श्री रामावतार पोद्दार ने कहा कि बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एक महान संस्था है इसके लक्ष्य महान हैं तथा इसके उद्देश्यों की प्राप्ति अच्छाई, ईमानदारी एवं निष्ठा के साथ काम करने पर ही संभव है। आज समाज में निष्ठापूर्वक काम करने वालों का अभाव है। बहुत से लोग बैठकों में भाग लेकर सम्मेलन की त्रुटियों के बारे में बताते हैं और सम्मेलन से बहुत तरह की अपेक्षाएं रखते हैं। बैठक में भाग लेने को ही बहुत बड़ा योगदान समझते हैं। सामाजिकता एवं सामूहिकता की भावना से कोसों दूर रहते हैं। बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन गत ६४ वर्षों से समाज के लिए सेवारत है किन्तु मेरा अनुभव है कि कार्यकर्त्ता का अभाव पूर्व में भी था, आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। आवश्यकता इस बात की है कि सच्चे, लगनशील कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहित करना होगा। समाज के सम्पन्न व्यक्तियों को समाज के प्रति चिंतनशील बनाना होगा। मैंने अपने अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल के नेतृत्व में सम्मेलन के लिए कुछ कार्य करने का प्रयास किया है।

इस सत्र को संगठन सत्र के रूप में लिया गया था। संगठन से तात्पर्य समाज के हर व्यक्ति धनाढ्य, मध्यम एवं कमजोर वर्ग तीनों को मिलाकर एक कड़ी में पिरोया जा सके। सम्मेलन से समाज का हर व्यक्ति जुड़े। इसकी सदस्यता ग्रहण करे। केन्द्र से सभी शाखाएं तारतम्य

बनाकर रखे तो सम्मेलन के कार्यों में गति आयेगी। इसके लिए इस सत्र में अधिकाधिक दौरे किये गये हैं।

कुल ११९ शाखाओं का दौरा किया गया जिसमें सर्वश्री रामजी भरतिया, जयदेव प्रसाद नमानी, सीताराम बाजोरिया की भूमिका सराहनीय रही है। अध्यक्ष जी ने भी विभिन्न प्रमंडलों एवं शाखाओं का दौरा किया है एवं उन्होंने मुजफ्फरपुर नगर शाखा के कुछ सदस्यों का सहयोग लेकर शाखाओं का भ्रमण कराया। भ्रमण में श्री किशोरीलाल अग्रवाल, श्री बैजु बंका, श्री अनन्तराम तुलस्यान, श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल एवं रीक्षपाल ने भी अपना महत्वपूर्ण समय दिया है। शाखाओं का चुनाव एवं काफी संख्या में सदस्य बनाए।

दौरे के दरम्यान काफी संख्या में साधारण, आजीवन एवं वंशानुगत सदस्य बनाए गए। कुल ३२२३ साधारण, १३५ आजीवन, १३५ वंशानुगत सदस्य इस सत्र में बने। इसका पूरा विवरण स्मारिका में प्रकाशित किया गया है। इसमें अधिकांश श्री नेमानीजी के प्रयास से बने हैं जिसके लिए मैं उन्हें साधुवाद देता हूं।

राष्ट्रीय महामंत्री का भाषण : राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए कहा कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना ७० वर्ष पूर्व २५ दिसम्बर १९३५ में कोलकाता में हुई थी। आरंभिक वर्षों से ही सम्मेलन ने समाज सुधार के क्षेत्र में प्रभावी कार्यक्रम एवं आन्दोलन किए जिसके फलस्वरूप पर्दा-प्रथा, विधवा-आदर्श विवाह, दहेज-दिखावा एवं फिजूलखर्ची, नारी शिक्षा आदि क्षेत्रों में समाज को एक नयी दिशा प्राप्त हुई। सामाजिक समरसता के लिए सम्मेलन ने लगातार कार्य किया है। शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में सम्मेलन ने विभिन्न प्रांतों में मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए शिक्षा कोषों की स्थापना की।

आज सम्मेलन की १२ प्रांतों में सक्रिय शाखाएं हैं और शीघ्र ही ६ अन्य प्रांतों में सम्मेलन की प्रादेशिक शाखाएं स्थापित की जायेंगी। हाल ही में कोलकाता में 'सम्मेलन भवन' क्रय किया गया है जो राष्ट्रीय गतिविधियों का एक केन्द्र बनेगा। सम्मेलन ने राष्ट्रीय स्तर पर नये १०,००० सदस्य बनाने का अभियान आरंभ किया है।

अप्रवासी मारवाड़ियों की सुविधा एवं कल्याण तथा अन्तर्राष्ट्रीय शहरों में सम्मेलन की स्थापना के विशेष प्रयास के मुख्य उद्देश्य से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ब्रिटेन के लंदन शहर में विदेश शाखा खोली गयी है।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष का भाषण : नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने अपने भाषण में कहा कि मगध की ऐतिहासिक भूमि पाटलीपुत्र में आयोजित बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के २४वें अधिवेशन के अवसर पर समाज के नेतृत्व का भार आपने मेरे निर्बल कंधों पर डाला है, यह मेरे प्रति आप सभी के अगाध स्नेह का प्रतीक है। आपकी यह स्नेहशक्ति ही मेरी कार्य क्षमता सम्बल है। आज इस भव्य आयोजन में उपस्थित होकर आपने मेरा मनोबल बढ़ाया है, इसके लिए मैं हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष
श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला

उन्होंने कहा कि पटना सिटी की इसी भूमि पर कभी महात्मा बुद्ध के 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का संदेश गूंजा था, भगवान महावीर का 'अहिंसा परमोधर्म' का पावन वचन मुखरित हुआ था, कला-प्रेमी नवाबों ने इस नगरी की शानो-शौकत में चार चांद लगाए थे, सौंदर्यशालीनी विदुषी और निपुण नृत्यांगना 'कोशा' ने नृत्य का जादू सारे विश्व में बिखेर था, हस्तशिल्प एवं कुटीर उद्योगों से निर्मित वस्तुओं को देश-विदेश में लोकप्रिय बनाने का कार्य यहां के व्यवसायियों ने ही किया था। हमारे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि हमारा यह २४वां अधिवेशन उस पुण्यभूमि में हो रहा है, जिस भूमि से मेरा बचपन से लगाव रहा है। मेरा जन्म इस सभा स्थल के पासवाले मकान में हुआ था। मेरी शिक्षा-दीक्षा इसी सिटी में स्थित मारवाड़ी विद्यालय में हुई थी और उच्च शिक्षा ग्रहण करने हेतु मैं पटना महाविद्यालय में यही से जाया-आया करता था।

हमारी उपलब्धियां : बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के विगत वर्षों के कार्यकलापों से आप महानुभाव 'सम्मेलन संवाद' के माध्यम से अवगत होते रहे हैं।

हमारी उपलब्धियां हमारे कृतित्व की बोलती तस्वीरें है, जिन्हें देखकर बिहारवासियों के हृदय में हमारे लिये मान-सम्मान है। हमारी सदाशयता का ही यह प्रमाण है कि हम बिहार के सामाजिक परिवेश में व्यवसायी, शिक्षक, चिकित्सक, उद्योगपति, पदाधिकारी, अधिवक्ता, वैज्ञानिक आदि विभिन्न रूपों में जाने-माने जाते हैं। हमारी विशेषतायें किसी जाति-धर्म या प्रान्तीयता से जुड़ी हुई नहीं है, वरन् हमारी विशेषता यह है कि हम बिहारवासियों के लिए हैं, बिहारवासी हमारे लिए हैं। हमारी सम्मिलित शक्ति हमारी प्रगति की आधारशिला है।

सामाजिक सुरक्षा : ज्वलंत प्रश्न : हम इस तथ्य को नकार नहीं सकते कि वर्तमान विषम परिस्थितियां हमारे समक्ष चुनौती बनकर खड़ी है जिनमें असुरक्षा, दुराव, मतान्तर, नयी-पुरानी पीढ़ी के बीच बढ़ती खाई, असहयोग की भावना आदि प्रमुख हैं। यदि हमने न चुनौतियों को नजर-अंदाज कर दिया तो निश्चय ही ये हमारी प्रगति मार्ग में बाधक सिद्ध होगी। इन सभी चुनौतियों में सबसे बड़ी चुनौती दिन-प्रतिदिन बढ़ती असुरक्षा की है- जिससे न केवल हम भयभीत हैं, वरन् हम अपने व्यवसायिक कार्यक्रम के संचालन में भी असमर्थ है। समाजिक सुरक्षा के प्रश्न पर इस अधिवेशन में हमें विचार विमर्श करना है और एक ऐसे निर्णय पर पहुंचना है जिससे हम ठोस कदम उठाने में सक्षम हो सकें। आपराधिक तत्व एवं विनाश मार्ग पर चलने वाले अज्ञानी लोग केवल अपना ही नहीं पूरे बिहार का विनाश कर रहे हैं। पुरुषार्थविहीन ऐसे लोगों को अपना पराया नहीं सूझता इसलिए वे हिंसा, हत्या, अपहरण जैसे जघन्य अपराधों में लिप्त हैं। ऐसी स्थिति में

हमें सम्मिलित रूप में आगे आकर इन अपराधियों के मन्सूबों को विफल करना होगा और ऐसा प्रभावी कदम उठाना होगा कि अपराधी तत्व सर उठाने की हिम्मत नहीं कर सकें।

भागो नहीं, जागो : बिहार राज्य के वर्तमान एवं असुरक्षित माहौल को बदलने के लिए हमें कृतसंकल्प होने की आवश्यकता है। हम अपनी एकता की शक्ति से असामाजिक तत्वों का हौसला पस्त करने में सक्षम हैं। आवश्यकता है राज्यव्यापी अहिंसक आन्दोलन की। हिम्मत और साहस से कदम आगे बढ़ाने की। हमारी पलायनवादी प्रवृत्ति से न केवल हमारा समाज कमजोर होगा बल्कि अपराधियों का मनोबल भी बढ़ेगा। हम जहां कहीं भी जायेंगे सदा भयभीत रहकर पलायन की बात सोचेंगे। इसलिए मेरा निवेदन होगा-भागिये नहीं, जागिये। हिम्मत से आगे बढ़िये, आपको पूरा जन-सहयोग मिलेगा। केवल मारवाड़ी व्यवसायी ही नहीं, बिहार के अन्य वर्ग के लोग भी अपराधिक घटनाओं से आक्रोशित हैं। हम असामाजिक तत्वों की समाप्ति हेतु अहिंसात्मक आन्दोलन की शुरूआत करें। किसलय अपहरण काण्ड में छोटे-छोटे बच्चे बच्चियों ने एकजुटता और अहिंसात्मक प्रतिरोध का जो उदाहरण पेश किया है, वह अनुकरणीय है।

उपरोक्त संदर्भ में वर्ष २००५-०७ में हम भविष्य दृष्टि FUTURE VISION को अपना कर नूतन सृष्टि कर सकते है इसके लिए-

१. आर्थिक प्रयत्नों की सीमा का गांवों तक विस्तार करें।

२. राष्ट्रीय समृद्धि में सहायक रूप में हमारी प्रत्यक्ष भूमिका हो।

३. मानवीय मूल्यों के विकास के समस्त सद्प्रयास किये जायें।

४. सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं सांस्कृतिक विरासत के रक्षण के लिए प्रान्तीय स्तर पर कार्यक्रम चलाये जायें।

५. हम अपने अर्जन का कुछ अंश निश्चित रूप से सामाजिक कल्याण के लिए सुरक्षित रखें।

६. सुरक्षात्मक कार्यवाई में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करें।

७. आपसी सद्भाव एवं समभाव के लिए प्रखंड, जिला एवं प्रान्त स्तर पर, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विचार गोष्ठी, संगोष्ठी का आयोजन कर जन-सहयोग को बढ़ावा दें।

८. कल्याणकारी योजनाओं को संचालित करने वाली संस्थाओं के कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता निभायें।

९. समस्त विकासात्मक कार्यक्रमों को अपनायें चाहें वह मारवाड़ी समाज से सम्बद्ध हो या नहीं।

१०. सादगी से जीवन व्यतीत करना मारवाड़ी समाज का विशेष आचरण रहा है। इसकी जगह वर्तमान में आडम्बर ने ले ली है। यह एक संक्रामक रोग है। इससे बचने के लिए हमें अपने अतीत के आचरण 'सादगी' को अपनाना होगा, यही इस अधिवेशन का आह्वान है :- *सादा जीवन एवं उच्च विचार, यही है अच्छे इन्सान एवं समाज की पहचान।*

११. समाज के कमजोर वर्ग के लिए कुछ नये कार्यक्रम बनाये जायें और सम्मेलन उनकी मदद में अपना सहयोगात्मक हाथ बढ़ाये। इसके लिए कुछ प्रस्ताव खुले अधिवेशन में आपके विचारार्थ रखे जायेंगे।

१२. सम्मेलन की विभिन्न समितियां-यथा शिक्षा समिति, चिकित्सा केन्द्र आदि द्वारा जो जनोपयोगी कार्यक्रम चलाये जा रहे है, उनसे संगठन को मजबूती मिली है और हमारी छवि निखरी है। उन्हें और व्यापक बनाया जाये। इसमें सम्मेलन की विशेष भागीदारी होनी चाहिए। हमारा सुझाव है कि मारवाड़ी समाज के कार्यकलापों के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए मुख्यालय स्तर पर एक जन-सम्पर्क केन्द्र की स्थापना की जाये, जिसके माध्यम से प्रकाशन, उपलब्धियों से संबंधित फिल्म-निर्माण, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा प्रचारात्मक मूल्यों को बढ़ावा मिले।

हमारी यह भी मान्यता है कि मारवाड़ी समाज के कार्यकलापों को सुनियोजित एवं सुसंगठित करने से संबंधित उप-समितियों का गठन हो। आप सभी महानुभावों से विचार-विमर्श के बाद हम इस दिशा में किसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। हम अपने हित के लिए तभी अग्रसर हो पायेंगे जब हमें बिहार प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकलापों के संचालन हेतु आपका भरपूर आर्थिक सहयोग प्राप्त होगा। इससे हम अपने संगठन को मजबूत बना पायेंगे और अपने कार्यक्रमों को मूर्तरूप दे सकेंगे। कहा गया है ''संघे शक्ति कलियुगे''। भगवान बुद्ध ने भी कहा था ''सघम् शरणम् गच्छामि।''

आइये, हम सब मिलकर मारवाड़ी सम्मेलन को सुदृढ़ बनायें। सादगी, सेवा, सुरक्षा एवं संगठन के चार खम्भों पर हम अपने समाज की एक भव्य एवं दिव्य इमारत का पुनर्निर्माण करें। *जय भारत! जय बिहार! जय समाज!*

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री रामावतार पोद्दार एवं पं. बंगाल के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानियां, व श्री महेश जालान ने भी अधिवेशन में विचार रखें।

महामंत्री श्री रामावतार पोद्दार ने सम्मेलन के कार्यकलापों पर आधार सत्र २००३-०५ का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसमें शाखा चुनाव, दौरा, सदस्यता का पूर्ण जानकारी दी।

इस अवसर पर दरभंगा से नवनिर्वाचित विधायक श्री संजय सरावगी, महापौर श्री ओम प्रकाश केडिया और बाजार समिति अध्यक्ष श्री अजय जालान का अभिनन्दन किया गया।

सत्र २००३-०५ में सराहनीय कार्यों के लिए शाखा, प्रांत एवं व्यक्तिगत स्तरीय पुरस्कारों का वितरण किया गया। जो निम्न रूप में है-

प्रांत स्तरीय पुरस्कार : सर्वश्रेष्ठ प्रान्तीय पुरस्कार - श्री रामजी भरतिया (मुजफ्फरपुर); सर्वश्रेष्ठ प्रान्तीय उपाध्यक्ष- श्री सीताराम बाजोरिया, मुजफ्फरपुर सर्वश्रेष्ठ कार्यकारिणी सदस्य- श्री कमल नोपानी- पटना

शाखा स्तरीय पुरस्कार : विशिष्ट शाखाएं- पटना, आरा, झंझारपुर स्टेशन, रक्सौल, मुजफ्फरपुर, सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम- जनसेवा पटनासिटी। व्यक्ति विकास- सासाराम; सांस्कृतिक- पटना, सर्वश्रेष्ठ पदाधिकारी- शाखाध्यक्ष- श्री गौरी शंकर पोद्दार- छपरा, शाखा मंत्री- श्री अशोक खेमका- कहलगांव

व्यक्तिगत स्तरीय पुरस्कार : विशेष कार्य- संगठन- श्री जयदेव प्रसाद नेमानी, मुजफ्फरपुर, सांस्कृतिक- श्री महेश जालान- पटना; अर्थ संग्रह- श्री जगदीश अग्रवाल- मुंगेर, प्रवासी बिहार- मारवाड़ी समाज की स्थापना के लिए- श्री ललित कुमार केजड़ीवाल- संयोजक, श्री राजेश मोदी- बंगलोर प्रकोष्ठ। श्री वी.पी. अग्रवाल- मुम्बई, इसके अतिरिक्त अध्यक्षीय पुरस्कार भी दिये गये।

अधिवेशन के महिला, युवा एवं खुला सत्रों में बहुत से उपयोगी प्रस्ताव पारित किये गये, जिनमें समाज के कमजोर लोगों को चिन्हित कर, उन्हें क्लेम बीमा के माध्यम से सहायता करना प्रमुख था।

तत्पश्चात अध्यक्ष जी ने **श्री कमल नोपानी** को **महामंत्री** मनोनीत करने की घोषणा की। श्री गिरधारी लाल सर्राफ के धन्यवाद ज्ञापन से अधिवेशन के कार्यक्रमों की समाप्ति हुई।

महामंत्री श्री कमल नोपानी

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

बलांगीर : जेडॅ.आर.यू.सी.सी. के सदस्य निर्वाचित

सम्मेलन के बलांगीर शाखा के अध्यक्ष श्री गौरी शंकर अग्रवाल बलांगीर के ईस्ट कोस्ट रेलवे के जेड.आर.यू.सी. के सदस्य निर्वाचित हुए। इसके पूर्व श्री अग्रवाल सम्बलपुर डिविजन के डी.आर.यू.सी.सी. के सदस्य थे।

मध्य प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

जबलपुर : सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

१० फरवरी २००५। जबलपुर मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि दूरसंचार के निर्देशक श्री पवन कुमार जैन ने मारवाड़ी समाज को देश के अर्थ जगत की धुरी बताते हुए कहा कि अब इस समाज को आज की आवश्यकतानुसार शिक्षा व्यवसाय से भी जुड़ना चाहिए। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री निर्मल भूरा, अध्यक्ष श्री विजय भूरा एवं श्रीमती मंजू खण्डेलवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सांस्कृतिक कार्यक्रम में सरस्वती वन्दना के साथ-साथ आकर्षक नृत्य, फैन्सी ड्रेस का प्रदर्शन आदि सम्मिलित थे। कार्यक्रम को सफलीभूत करने में सर्वश्री कैलाशनाथ खण्डेलवाल, गीता पचौरी, विभा समदड़िया, महेश भट्ट आदि आदि की सराहनीय सहयोगिता रही एवं कार्यक्रम में मारवाड़ी समाज के गणमान्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे। अन्त में सभी कलाकारों को पुरस्कार वितरण किया गया। धन्यवाद ज्ञापन दीपक सुरजन ने प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

गुवाहाटी : राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत का अभिनंदन

८ जनवरी २००५ मारवाड़ी युवा मंच एवं चैम्बर ऑफ कॉमर्स द्वारा संयुक्त रूप से राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोकजी गहलोत का गुवाहाटी आगमन पर अभिनन्दन किया गया। समारोह में गुवाहाटी के अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक जी ने कहा कि मुझे अपने राजस्थान के प्रवासी सभी भाइयों से स्नेह तो है ही लेकिन असम में रहने वाले राजस्थानी भाइयों से कुछ विशेष ही लगाव है। यहां के मारवाड़ी जनहित के कार्यों में सक्रिय तो है हीं साथ ही यहां की महिलाएं भी इन भाइयों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में पीछे नहीं हैं। मंच के प्रांतीय अध्यक्ष श्री नवल किशोर मौर ने धन्यवाद ज्ञापन में कहा कि श्री गहलोत हमारे लिए सदैव ही मार्ग-दर्शक एवं स्नेह पात्र रहे हैं। उन्होंने गुवाहाटी से राजस्थान जाने वाली गाड़ी जोधपुर एक्सप्रेस की प्रतिदिन सेवा कराने का एवं एम्स के तर्ज पर असम में भी एक अस्पताल निर्माण कराने हेतु प्रयास करने का आग्रह किया।

जोरहाट : भवन निर्माण समिति की बैठक आयोजित

२६ दिसम्बर २००४। भवन निर्माण समिति की बैठक का आयोजन निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष श्री निर्मलजी हरलालका की अध्यक्षता में जोरहाट शाखा के आतिथ्य में किया गया। सभा में पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री प्रदीप खदड़िया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मधुसूदन सिकरिया, प्रांतीय अध्यक्ष श्री नवल किशोर मौर, प्रांतीय महामंत्री श्री अनिल अगरवाला (पदेन सदस्य), प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) श्री अरुण

अग्रवाल, प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री अमित अग्रवाल (मनोनीत सदस्य) एवं श्री अशोक नागोरी विशेष आमंत्रित थे।

श्री अनिल अग्रवाल ने सभा के उद्देश्य की व्याख्या की तथा भवन निर्माण के क्षेत्र में हुई कार्यवाही का ब्यौरा दिया। विचार-विमर्श के दौरान सभासदों द्वारा प्रांतीय इकाई का एक स्थाई कार्यालय भवन की जरूरत महसूस की गई एवं सरकारी जमीन प्राप्त करने की दिशा में प्रयास प्रारम्भ करने का भी निर्णय लिया गया। साथ ही गुवाहाटी में एक स्थायी कार्यालय भवन की व्यवस्था का निर्णय लिया गया।

प्रांतीय भवन निर्माण समिति की सूची इस प्रकार हैं

सर्वश्री निर्मल हरलालका, सभापति- बरपेटा रोड, अरुण बजाज- गुवाहाटी, अनिल जैन-गुवाहाटी, पवन सीकरिया- गुवाहाटी, पवन अग्रवाल- गुवाहाटी, प्रदीप खंदड़िया-देरगांव, मधुसूदन सीकरिया-गुवाहाटी, जगमोहन सोनी-गुवाहाटी, जगदीश लोहिया- नगांव, रामजीवन सुरेका- तिनसुकिया, कृष्ण कुमार बजाज-गुवाहाटी, नवल किशोर मौर, पदेन सदस्य- गोवाहाटी, अनिल कुमार अगरवाला, पदेन सदस्य- गुवाहाटी, अरुण कुमार अग्रवाल, मनोनीत सदस्य- गुवाहाटी, अमित कुमार अगरवाल, मनोनीत सदस्य- नलबाड़ी।

६२वीं शाखा नाहोलियां बरडूबी का गठन

२४ दिसम्बर २००४। प्रांतीय अध्यक्ष नी नवल किशोर मौर द्वारा नाहोलिया बरडूबी शाखा को पूर्वोत्तर प्रांत की ६२वीं शाखा के रूप में मान्यता प्रदान की गई। शाखा के गठन में टेंगाखाट शाखा के शाखाध्यक्ष श्री मनोज पारिक एवं शाखा मंत्री श्री सनोज पारिक तथा संस्था के अनेक सदस्यों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। मंच के प्रांतीय अध्यक्ष नवल किशोर मौर ने संस्थापक शाखाध्यक्ष के रूप में रमेश अग्रवाल एवं संस्थापक शाखा मंत्री के रूप में राजकुमार बजाज को शपथ पाठ दिलाकर विधिवत रूप से कार्यभार सौंपा।

अन्य संस्थाएं

कोलकाता : श्रीमती राजे द्वारा राजस्थानी प्रवासियों को राजस्थान आमंत्रण

१३ मार्च ०५। राजस्थान फाउण्डेशन द्वारा मिलन गोष्ठी समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य रूप से आमंत्रित राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने राजस्थानी प्रवासियों को राजस्थान में कार्य करने हेतु आह्वान करते हुए कहा कि राजस्थान में निवास हेतु उचित वातावरण है तथा हमलोग इस दिशा में सही कदम उठा रहे हैं। मैं उनके प्रति आभार प्रदर्शित करती हूं जिन्होंने राजस्थान में निवेश किया है तथा सरकार के कामकाज से संतुष्ट हैं। राजस्थान के विषय में उचित जानकारी मिल सके तथा निवेश का वातावरण तैयार किया जा सके इसके लिए कोलकाता चेप्टर के सचिव श्री संदीप भूतोड़िया के साथ टास्क फोर्स गठन करने का उन्होंने सुझाव दिया।

कार्यक्रम में राजस्थान फाउण्डेशन के अध्यक्ष सर्वश्री हरिमोहन बांगड़, बेलारूस के कान्सल-जनरल तथा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, हर्ष नेवटिया, डॉ. प्रभा खेतान, दीपचन्द नाहटा, राधेश्याम अग्रवाल, प्रह्लाद राय अग्रवाल, महेन्द्र जालान, गोविन्द सारडा, विश्वम्भर नेवर, तिलोकचंद डागा, उपमेयर मीना पुरोहित, स्मिता बाजोरिया, शशिप्रभा जालान, विश्वम्भर दयाल सुरेका, कुसुम खेमानी, रेणु राय आदि उपस्थित थे।

गोष्ठी में मुख्यमंत्री को कई तरह के सुझाव इस दिशा में प्राप्त हुए जिन पर राजस्थान जाकर अमल में लाने तथा इस दिशा में सही कदम उठाने का उन्होंने आश्वासन दिया। इस अवसर पर साहित्यकार प्रभा खेतान द्वारा पार्थो घोष की कलाकृति 'धुन में प्यार' नामक पेंटिंग मुख्यमंत्री को भेंट की गई।

मुम्बई : अग्रवाल सेवा समिति का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पिछले दिनों अग्रवाल सेवा समिति (मुम्बई) के वार्षिकोत्सव पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका का पगड़ी, शॉल एवं मोमोन्टो प्रदान कर तथा तिलक कर स्वागत किया गया।

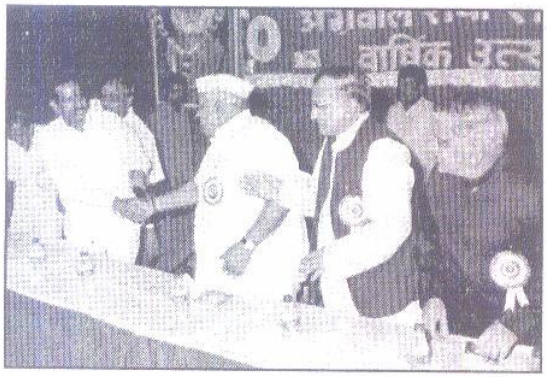

अग्रवाल सेवा समिति (मुम्बई) के वार्षिकोत्सव पर मंचासीन हैं बायें से सर्वश्री राजेन्द्र मित्तल, गणेश नायक, एक्साइज एंड रेवेन्यु मंत्री, महाराष्ट्र, मनमोहन गुप्ता, ओम प्रकाश चौधरी एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री भानीरामजी सुरेका।

सदस्यता आवेदन पत्र

संख्या .....

तार:APKASAMAJ
फोन: 2268-0319

महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
(ALL INDIA MARWARI FEDERATION)
१५२-बी, महात्मा गांधी रोड,
कोलकाता- ७०० ००७

दि. .....

महोदय,

मैं सम्मेलन का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और इस हेतु निम्नलिखित शुल्क का चेक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर/नगद भेज रहा/रही हूं। **आजीवन शुल्क रु. २५००/-, साधारण विशिष्ट शुल्क रु. २५०/- प्रतिवर्ष, समाज विकास शुल्क रु. १००/- प्रति वर्ष।**

(आजीवन व साधारण विशिष्ट सदस्यों को सम्मेलन का मासिक मुखपत्र समाज विकास नि:शुल्क भेजा जाता है।)

संलग्न : पासपोर्ट साईज फोटो

भवदीय,

नाम : ..... पिता/पत्नी/पति का नाम : .....
शिक्षा : ..... व्यवसाय : ..... जन्मतिथि : .....
विवाह तिथि : ..... पैतृक गांव : .....
कार्यालय का पता : .....
टेलीफोन नम्बर : ..... तार : ..... फैक्स : .....
ईमेल : ..... मोबाइल : .....
निवास स्थान का पता : .....
टेलीफोन नम्बर : ..... मोबाइल : ..... सदस्य बनाने वाले का नाम : .....

कार्यालय हेतु

पक्की रसीद एक माह के अंदर भेजी जाएगी।

भूल सुधार

- गत अंक में पृष्ठ ३० पर प्रकाशित पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अंतर्गत 'शिवसागर शाखा- साधारण सभा तथा नई कार्यकारिणी का गठन' शीर्षक समाचार में एक विवरण गलत प्रकाशित हो गया था। कृपया उसका संशोधित रूप इस प्रकार पढ़े- श्री राधाकृष्ण अग्रवाल - विशिष्ट सलाहकार, श्री सत्यनारायण दाधीच - अध्यक्ष तथा श्री प्रताप कुमार पोद्दार - कार्यकारी अध्यक्ष।
- लखीमपुर शाखा : नवनिर्वाचित कमिटि का गठन में संशोधित रूप है - श्री बलवीर शर्मा - कोषाध्यक्ष।
- फरवरी, ०५ अंक में पृष्ठ ३४ पर 'सिलीगुड़ी शाखा अध्यक्षा सरिता सरावगी को श्रद्धांजलि' शीर्षक प्रकाशित समाचार में कृपया संशोधित रूप पढ़ें- ''पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन की प्रादेशिक कमेटी ने बर्नपुर शाखा के साथ....।''

प्रपत्र - ४

समाचार पत्र पंजीयन केन्द्रीय कानून १४५६ (संशोधित) के आठवें नियम के साथ पढ़ी जाने वाली प्रेस तथा पुस्तक कानून की धारा १४ डी उपधारा (बी) के अन्तर्गत समाज-विकास (मासिक) कोलकाता, नामक समाचार पत्र से सम्बन्धित तथा स्वामित्व एवं अन्य बातों का ब्यौरा :-

प्रकाशन का स्थान	:	१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७००००७
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	श्री भानीराम सुरेका
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	८, कैमक स्ट्रीट, कोलकाता- ७०००१६
सम्पादक का नाम	:	श्री नन्दकिशोर जालान
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	२६, अमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलकाता- ७००००९
मालिक	:	अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७००००७

मैं, भानीराम सुरेका, घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

- भानीराम सुरेका
प्रकाशक के हस्ताक्षर

२५.३.२००५

Insync with Nature...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE** – BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE** – BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON** – LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 – 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

CENTRAL MINES OFFICE

BARAJAMDA – 833221, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06596- 262221/262321; Fax: 91-6596-262101;GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

BARBIL – 758035, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 276891; Telefax: 91-6767-276891

Leaders

in construction equipment and infrastructure financing

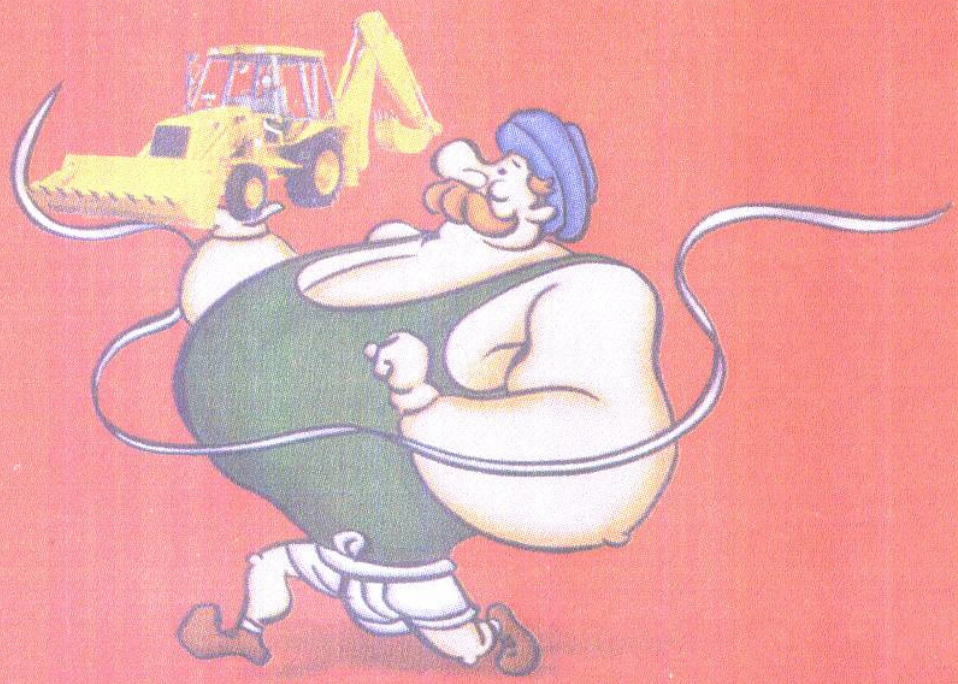

SREI

Srei Infrastructure Finance Limited

'Vishwakarma' 86C, Topsia Road (South), Kolkata-700 046,Tel : +91 33 2285 0112-5/0124-7, Fax : +91 33 22857542/8501,
corporate@srei.com, www.srei.com

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,